ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 18 अंक-3 मई-I, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

'एक परमात्मा, एक विश्व परिवार' देश का चिंतन

▶ ब्रह्माकुमारी संस्था के 80 वर्ष पूर्ण होने पर दी शुभकामनाएं -माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

▶ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया सम्बोधित ▶ 80 देशों से समारोह में शरीक हुए प्रतिनिधि ▶ रशियन कलाकारों ने बांधा समां

ब्रह्माकुमारी संस्थान की 80वीं सालगिरह की संध्या पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा शांतिवन के डायमण्ड हॉल में सभा को शुभकामना संदेश देते हुए।

शांतिवन। विश्व एक परिवार है। हम सब एक पिता की संतान हैं, यह भारत का चिंतन रहा है। हमारे देश की खासियत है कि हम अपने विचारों को किसी पर थोपते नहीं हैं। यही देश है जिसने विश्व को डंके की चोट पर कहा है कि ईश्वर एक है। इतना विशाल, व्यापक चिंतन और विचार इसी धरती पर पैदा हुआ। शास्त्रों ने बताया कि सत्य एक है, सिर्फ अलग-अलग लोग उसे अलग-अलग रूप में कहते हैं।

उक्त उद्‌गार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किए। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के 80 वर्ष पूर्ण होने पर आबू रोड के शांतिवन परिसर में इंटरनरेशनल कॉन्फ्रेंस कम कल्चरल फेस्टिवल **''विश्व परिवर्तन के लिए परमात्म ज्ञान'' विषय पर** आयोजित किया गया। मोदी जी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था आज भी उसी विचार, उतनी ही कर्मठता, एकरूपता के साथ विश्वभर में अपना संदेश दे रही है, जिस संकल्प से 80 वर्ष पूर्व दादा लेखराज ने इसकी नींव रखी थी। 80 साल का मतलब सहस्र चंद्रदर्शन का पर्व होता है। यह वर्ष किसी भी संस्था, व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होता है। इस दौरान सभी ने टॉर्च जलाकर शांति की रोशनी फैलाई, जिसकी मोदी जी ने भी सराहना की।

▶ 30 हज़ार लोगों का खाना सोलर एनर्जी से

आबू जैसे स्थान पर तीन मेगावॉट की सोलर एनर्जी का प्रयास पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत ही प्रेरक है। यहाँ एक साथ 30 हज़ार लोगों का भोजन सोलर एनर्जी से बनाया जाता है। यह बहुत बड़ा बदलाव लाने का प्रयास है। यहाँ सिर्फ आध्यात्मिक बातें नहीं, बल्कि गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही सभी संस्था के भाई-बहनों से आह्वान किया कि आप सभी भी अपने घरों में एल.ई.डी. लाइट लगाकर बिजली बचाने में अपना योगदान दें।

▶ ऊर्जा बचाने का लें संकल्प

संस्था बहुत बड़ा बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। यहाँ सिर्फ आध्यात्मिक बातें नहीं, बल्कि गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है। 2022 तक ब्रह्माकुमार व कुमारियों के माध्यम से ऊर्जा बचाने का संकल्प लें। सभी अपने मोबाइल फोन पर भीम एप डाउनलोड कर नकद से डिजिटल के लिए प्रयास करें।

▶ बालिकाओं को शिक्षित करें

प्रधानमंत्री ने कहा कि 9वीं से 11वीं तक के बच्चे पोषण के संबंध में शिक्षित होंगे तो टीचर पर उनका गहरा प्रभाव होगा। 2022 एक संकल्प लेने के लिए आपको निमंत्रित करता हूँ। ब्रह्माकुमारी संस्था का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। मैं आग्रह करूंगा कि आप भी सक्रियता से कार्य करें तो बहुत बड़ा सकारात्मक बदलाव हमारे सामने होगा।

▶ ऑनलाइन कोर्स शुरु करने का आह्वान किया

प्रधानमंत्री मोदी ने संस्था के पदाधिकारियों से ऑनलाइन मूल्य एवं आध्यात्मिक कोर्स शुरु करने का आह्वान किया। इसके माध्यम से देशभर में ऑनलाइन सर्टिफिकेट, डिग्री कोर्स कराकर एग्जाम कराने के लिए कहा। उन्होंने विश्वास दिलाया कि इसमें भारत की सभी युनिवर्सिटी का पूरा सहयोग रहेगा।

संस्था की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी।

अपना बनाके बाबा ने मुस्कुराना सिखा दिया

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि हर एक को मैं कौन, मेरा कौन जानना चाहिए। 80 साल से मैं बाबा की सेवा में हूं। वही मेरा माता-पिता है, उसके सिवाए मेरा दुनिया में कोई नहीं है। उसने मुझे ऐसी पालना भी दी है और सेवा भी कराई कि वही मेरा दिला राम है। धीरज है तो शांति है, प्रेम है, कोई भी बात मुश्किल नहीं है। अपना बना के बाबा ने मुझे मुस्कुराना सिखा दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने भारत के सभी स्कूल-कॉलेजों में मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा को भी संलग्न करने का निवेदन किया। उन्होंने कहा कि बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता।

दादी जानकी ने प्रधानमंत्री मोदी को माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया - उन्होंने कहा नरेन्द्र भाई पूरे विश्व को प्रेम, खुशी, शक्ति दे रहें हैं इसकी बधाइयां।

▶ परमात्मा ने मातृशक्ति को बनाया आधार

राज. पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक गुलाब कोठारी, 'मातृशक्ति की बदौलत यह संगठन दुनियाभर में फैल गया'।

आत्मसम्मान को बनाये रखने के तौर-तरीके

एक संत के पास आत्म सुधार का संदेश लेने गये एक मनुष्य ने कहा: ''मैं ठीक नहीं हूँ' 'मेरा व्यवहार ठीक नहीं है' 'मैं झगड़ालू प्रवृत्ति का हूँ''।

संत ने उसे आगे बोलने से रोकते हुए कहा: 'बस, अब तू अपनी निंदा करना बंद कर, जब तक ऐसा नहीं मानेगा कि मैं सज्जन बन सकता हूँ और हर रोज़ उसके लिए आत्म-दर्शन करूंगा, तब तक तू सुधर नहीं सकेगा। अपनी भूलों को स्वीकार करना, ये एक अलग वस्तु है, परंतु आत्मनिंदा, ये दूसरी वस्तु है। जिस मनुष्य को मनुष्य होने का गौरव नहीं, वो मनुष्य मानवता के बारे में कुछ भी सोच नहीं सकता, वो मनुष्य अपने को मनुष्य कहने लायक ही नहीं। वैसे तो संत भी ईश्वर समक्ष आत्म-निवेदन के लिए स्वयं को भला-बुरा, पापी-कपटी, अपवित्र कहता है, लेकिन उनमें आत्मनिंदा का भाव नहीं अपितु आत्म-दर्शन की भावना होती है।'

- ब्र. कु. गंगाधर

'न्यू इंडिया, यंग इंडिया के एक अंक में महात्मा गांधी ने बहुत सुंदर कहा है कि जो व्यक्ति आत्म गौरव का ख्याल नहीं रखता, वो दास ही बनकर रहता है।'

आत्मिक प्रगति का आधार भी आत्म-दर्शन है। इसीलिए तो 'कठोपनिषद के एक श्लोक में स्वामी विवेकानंद ने उल्लेख करते हुए कहा कि 'उत्तिष्ठित हो, जागृत हो, 'हे मनुष्य, आप उठो, जागो, श्रेष्ठ महानुभाव के पास जाकर आत्म-तत्व को पहचान लो।' ज्ञानी लोगों ने भी इस पथ को तलवार की धार पर चलने जैसा दुर्गम बताया है।

जीवन में शुद्ध आचरण का महत्व है। उसके सम्बन्ध में महर्षि नारद और रावण के बीच के संवाद को बताया है। उसके अनुरूप, एक बार रावण की सोने की लंका में महर्षि नारद जा पहुँचे, तब रावण ने उनका सत्कार कराकर लंका में अलग-अलग स्थानों का भ्रमण कराया और दिखाया। और अंदर में फूले नहीं समाते हुए कहा: 'महर्षि, देखो ये हमारी गऊशाला, ये मलशाला, ये अश्वशाला, गजशाला, यज्ञशाला, ये सब हैं साधू-अभ्यासगतों की धर्मशाला।'

ये सब देखने के बाद महर्षि नारद ने पूछा: 'महाराज दशानन, इन सब शालाओं में 'आचरणशाला' कहाँ है?'

उनके उत्तर में आश्चर्यचकित होकर रावण ने कहा: 'ऐसी कोई 'आचरणशाला' तो लंका में नहीं है।'

तब नारद ने स्पष्ट शब्दों में कहा: 'तो फिर लंकेश महाराज, आचरणशाला के बिना तमाम शालायें तो जैसे कि बिना एक के आगे शून्य के बराबर हैं। ज्ञान भले ही किसी भी प्रकार का हो, चाहे शास्त्र का हो, वेद-वेदान्त का हो, या फिर परम सत्य का हो, उनकी पूर्वशर्त है 'आचरण'। आचरण में विवेक समाविष्ट है।

आत्म-निंदा के बदले आत्म-दर्शन करना चाहिए। मनुष्य की विचारशाला अशुद्ध है, इसीलिए आचरणशाला का वो शिल्पी बन ही नहीं सकता। 'मैं कौन' के जवाब में महर्षि रमण ने कहा है कि 'जब जगत दिखता है तब आत्म-स्वरूप नहीं दिखता, और जब आत्म-स्वरूप का दर्शन होता है तब जगत नहीं दिखता!'

ज़िन्दगी में मनुष्य हरेक क्षेत्र में 'वृद्धि' चाहता है, लेकिन 'शुद्धि' नहीं चाहता। आज का मनुष्य दो बीमारियों से पीड़ित है, एक 'बड़प्पन के अहंकार से' और दूसरा 'छोटी से छोटी लघुता से'। इन दोनों में आत्म-दर्शन की ज़रूरत है। आत्म-प्रशंसा, ये विवेक की मृत्यु है, ऐसे ही आत्म-निंदा भी स्वमान का अवसान है।

एडिशन ने एक बात पर ज़ोर देते हुए कहा है कि : 'आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाना, उससे तो हज़ार बार मरना ज़्यादा अच्छा।'

आत्म-सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए...

1. लघुता ग्रन्थी से मुक्त रहकर आत्म-गौरव के महत्व को समझना।
2. आत्म-दर्शन माना ही अंदर देखने की आदत को प्रखर बनाना। स्वयं की निंदा किये बिना दुर्गुणों को निकाल फेंकना।
3. किसी को भी खुश करने के लिए अपने स्वमान को हल्का नहीं करना।
4. दाता न बन सके तो कोई बात नहीं, लेकिन भिखारी या याचक तो ना ही बनें।
5. याद रखो : 'करो दोस्तों पहले आप अपनी इज़्ज़त जो चाहो, करें लोग इज़्ज़त ज़्यादा।'

बेहद में रहने से हद आपेही छूट जायेगा

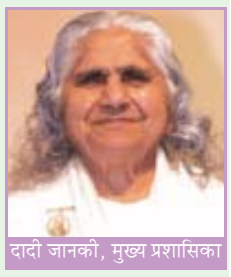
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा जैसा इस जहाँ में और कोई नहीं है, वो भागीरथ है, सारे कल्प में एक ही बार उनकी पढ़ाई पालना के द्वारा जो प्यार मिलता है वो फिर कभी नहीं मिलेगा। अभी इसमें हरेक का अपना-अपना वन्डरफुल पार्ट है। सारे जहाँ को देखना, जानना और सेवा करना यह भी भाग्य है। मैं कहती हूँ बाबा भागीरथ है और मेरा रथ सिर्फ भाग्यशाली है या सौभाग्यशाली है! तो ऐसी सभा को देख रचता कैसे नहीं याद आयेगा। याद करना नहीं पड़ता है पर आपेही याद आता है। तो यह भाग्यशाली रथ है, उनके साथ अभी अव्यक्त होकर भी हमारी दिल ले रहा है। नहीं तो जब बाबा अव्यक्त हुआ, तो थोड़ा मुझे फिकर था। यह रचना इतनी बड़ी बनेगी क्या! वो दिन याद करो जब बाबा अव्यक्त हुआ, उसी टाइम बाबा ने कहा था अभी आपको कुछ करना है। तो हमको जो साकार वा अव्यक्त में पालना मिली है, अभी और क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए, इसलिए कोई फिकर नहीं है। मैं भाग्यशाली, सौभाग्यशाली तो क्या... खुशनसीब हूँ, जो बाबा के करीब रहने का, साथ रहने का मौका मिला।

यह जो बाबा ने टाइमटेबल का नियम बनाके दिया है, वो बहुत ज़रूरी है, इससे बहुत अच्छा रहता है। एक अमृतवेला, फिर नुमाशाम, जो ऐसे ही संगठन में याद में बैठते हैं। बाबा देख रहा है, बच्चे कहाँ तक बाबा के प्यार में भरपूर हो गये हैं। वन्डर है, खुशी जैसी खुराक नहीं, सारी लाइफ के अन्दर से बाबा ने चिंता फिकर से फारिग कर दिया है। पढ़ाई ऐसी है, पता ही नहीं है चिंता क्या होती है? चिंता है चिंता के बराबर, समझो शरीर छोड़ेंगे तो क्या करेंगे? अर्थी कहाँ ले जायेंगे? अभी विदेश में कोई अच्छी आत्मा ने शरीर छोड़ा है, तो उनका बुद्धियोग यहाँ लगा रहे यह भावना है। वो उनको पहुँचता है। हम सब परिवार में एक दो के पास हैं या दूर हैं पर सब बाबा के साथ हैं, ऐसी फीलिंग है ना।

जब भी सभा में आती हूँ तो इतनी खुशी इमर्ज हो जाती है, जो वो खुशी मुख से बताई नहीं जा सकती है। इसके लिये सिर्फ ओम् शान्ति कहना ही बहुत है। पहला मैं आत्मा हूँ तो देह के सम्बन्धियों से पार, इस भागीरथ को देरी नहीं लगी, मैंने देखा है कि सम्बन्धों से न्यारा कैसे बना जाता है। बेहद में रहने से हद आपेही छूट जाती है। तो हम खुशनसीब हैं जो बाबा हमारे करीब है, पास है। राइट हैण्ड में है बाबा और लेफ्ट में है बीती को चितवो नहीं।

अभी जो संस्कार बन रहे हैं, बने भी हैं भिन्न-भिन्न शब्दों में बाबा की समझानी रोज़ मिलती है। अगर बाबा अभी मुरली नहीं सुनाता तो हम कहाँ होते? भले वतन में है बाबा, मूलवतन में नहीं बैठा है। जहाँ बाबा वहाँ हम। अगर बाबा मूलवतन में बैठ जायेगा तो हम कैसे जायेंगे! सूक्ष्मवतन में है बाबा तो सूक्ष्म खींच रहा है कोई डालके प्रेम की डोर।

ऐसे है? सभी आत्मायें बाबा के बच्चे उस अनुभव में खो जायें इसलिए अपनी दिनचर्या में चेक करो तो मनमनाभव के मंत्र को जपना नहीं पड़ता है, पर मन में अगर बाबा आ गया तो बुद्धि कहाँ जायेगी नहीं। जब मामेकम् बाबा कहता है तो ऐसे लगता है एक सबका है, पर मेरा पर्सनल है। है सबका बाप, सभी धर्म स्थापकों का भी बाप है। हमको तो यह फील होता है कि यही हमारा असली बाप है। परन्तु वो बेहद में रहने से हमको भी यह शिक्षा दी है, दे रहा है, सब अपने भाई बहन हैं। सेवा अर्थ सब अलग-अलग सेवास्थानों पर हैं, किसी के भी नाम रूप का सहारा नहीं लिया है, बाबा के सिवाए कहाँ कदम नहीं रखा है। बाबा इशारा करता है, तुम्हारा कदम कदम कमाई कराता है, याद करना नहीं पड़ता है, याद रहती है।

अंत में सिर्फ संकल्प शक्ति ही काम आयेगी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

चाहे हम बोलते हैं, चाहे हम कर्मणा करते हैं, लेकिन पहले तो संकल्प ही चलता है ना। जैसा संकल्प चलता है वैसे मुख से बोल भी निकलते हैं। जैसी वृत्ति, दृष्टि होती है वैसे ही कर्म होते हैं इसलिए बाबा कहते हैं कि संकल्प-शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है और अंत में यह संकल्प शक्ति ही हमारे काम आयेगी। यह साधन तो न थे और न रहेंगे। जबसे स्थापना हुई है तब से ही यह सब साधन निकले हैं। यह सब साधन सेवा के लिए हैं, आगे बढ़ने के लिए निकले हैं, लेकिन यह सदा थोड़े ही रहेंगे। तो अंत में भी हमको संकल्प शक्ति ही काम में आयेगी। टचिंग होनी चाहिए ना, यह टेलीफोन, फैक्स, यह कम्प्युटर, ईमेल आदि क्या-क्या निकले हैं, यह सब साधन संदेश पहुँचाने के लिए निकले हैं। परंतु साधना के बिना यह सब साधन बेकार हैं। साधन हम यूज़ करते हैं लेकिन साधन के वश होना और साधन को निमित्त कार्य अर्थ यूज़ करना, फिर न्यारे हो जाना, वश नहीं होना, इसलिए बाबा ने अ-ाजकल संकल्प शक्ति पर बहुत अटेन्शन दिलाया है। संकल्प शक्ति हमारे कंट्रोल में होनी चाहिए। अंत में यह मन्सा संकल्प ही पास विद ऑनर बनने में मदद करेंगे।

अगर संकल्प शक्ति कभी यहाँ, कभी वहाँ फालतू नाचती रहती है तो मन्सा सेवा कैसे कर सकेंगे! हमारा पहले एक चित्र बना था जिसमें दिखाया था कि वृक्ष के नीचे एक योगी बैठा है, योग कर रहा है और वृक्ष के ऊपर बंदर बैठे हैं वह इधर से उधर, उधर से इधर जम्प दे रहे हैं। तो उस चित्र में दिखाया था - मन भी ऐसे बंदर के समान एक डाली से दूसरी डाली पर घूमता रहता है, जम्प लगाता है। तो संकल्प शक्ति एक सेकेण्ड में कहाँ तक पहुँच सकती है, यह तो सबको अनुभव है, वैसे आप कहाँ नहीं भी पहुँच सको लेकिन संकल्प से तो पहुँच ही सकते हो। तो बाबा ने हम सबको यही अटेन्शन दिलवाया कि संकल्प-शक्ति पर अटेंशन रखो। संकल्प-शक्ति सभी के पास है, लेकिन अगर शुभ तरफ उपयोग करते हैं तो वह जमा होती है और व्यर्थ में करते हैं तो न अच्छ न बुरा और बुरे संकल्प करते हैं तो शक्ति गंवाते हैं। संकल्प एक शक्ति है। जैसे धन शक्ति है। धन अगर अच्छी तरह से किसको यूज़ करना आता है तो मौज मनाता है और धन अगर ऐसे ही बैंक में पड़ा है, और वह ऐसे ही मर जाता है तो व्यर्थ गया। और गंवाया तो नुकसान होता है, ऐसे ही यह संकल्प शक्ति सबसे बड़ा खज़ाना है, इससे हम जो चाहें अपना भविष्य बना सकते हैं, जमा कर सकते हैं। और संकल्प शक्ति के ऊपर अगर आपका कंट्रोल है तो समझो सब शक्तियों के ऊपर कंट्रोल है।

तो मूल आधार संकल्प है। बाबा कहते हैं इसको जमा करो। स्थूल धन को जमा करने की कितनी कोशिश करते हैं। स्थूल धन को बचाने का हमको ध्यान रहता है, लेकिन वह भी संकल्प अगर मेरा ठीक है तो कमा सकते हैं। अगर संकल्प शक्ति हमारी नीचे-ऊपर है तो कमाई भी नहीं कर सकते हैं। कोई लखपति और कोई कखपति बन जाता है, कारण क्या होता है? संकल्प शक्ति कमज़ोर होने के कारण निर्णय शक्ति नहीं, और निर्णय शक्ति न होने के कारण हाँ के बजाए ना किया तो गया। इसलिए बाबा रोज़ कहता है अपना चार्ट ज़रूर देखो। लेकिन सारा दिन अपनी मस्ती में मस्त होंगे, तो फिर टाइम नहीं मिलता है। फिर तो चेकिंग ही नहीं होती। तो रात को सोचेंगे क्या! सोचेंगे भी तो समझ नहीं सकेंगे कि मैंने किया ही क्या, लेकिन हमारी पुरुषार्थी लाइफ है तो इतना अटेंशन रहता है ना। समझ में तो आता है कि हम रांग कर रहे हैं, अगर हम अपनी चेकिंग इतनी भी नहीं करते हैं तो बाकि पुरुषार्थी किस चीज़ के! तो अपने को चेक करना, यही तो हमारा जीवन है।

आप सिर्फ एक घण्टा ही चेक करो तो मालूम पड़ेगा कि फालतू समय और संकल्प कितना जाता है, जिसमें हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। अंत समय में जब हमारा पेपर होगा उस समय बाबा मदद नहीं करेगा! उस समय तो देखेगा कि बच्चों ने क्या-क्या मेहनत की है और मेहनत का फल ले रहे हैं। उसके लिए पुरुषार्थ तो हमको अभी करना है।

ब्रह्माकुमारीज़ के 80वीं वर्षगांठ पर शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में महानुभावों के उद्‌बोधन

यहाँ दया, ममता देखने को मिली

इलाहाबाद हाईकोर्ट लखनऊ बेंच के वरिष्ठ न्यायाधीश शबीह उल हसनैन ने कहा कि यहाँ दया, प्रतिबद्धता, ममता, करुणा देखने को मिलती है। वसुधैव कुटुम्बकम का जितना अच्छा चित्रण यहाँ हुआ है, कहीं नहीं हुआ। पूरा संसार एक परिवार है। हम सब एक ईश्वर की संतान हैं।

ब्रॉडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी व वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह ने कहा कि बाज़ार की शक्तियों के बीच जीवन मूल्यों की शिक्षा देना और मूल्यों का प्रचार-प्रसार करना बहुत मुश्किल काम है जो ब्रह्माकुमारी संस्थान बखूबी कर रहा है। यह अद्‌भुत संस्थान है, इससे मैं पिछले 10 सालों से जुड़ा हुआ हूँ। जब भी यहाँ आता हूँ, खुद को हर बार यहाँ के लोगों से बहुत छोटा पाता हूँ। छोटेपन का यह अहसास ही मुझे यहाँ पर खींच लाता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने संस्थान को स्वच्छ भारत और ऊर्जा के क्षेत्र की चुनौतियों से निपटने का जो भागीरथ कार्य दिया है, उसमें यह संस्थान पूर्ण रूप से सफल होगा। यह चिंता की बात है कि आज देश का जी.डी.पी. बढ़ रहा है। मगर यू.एन. के हैप्पीनेस इंडेक्स में हमारा नंबर साल दर साल पीछे आता जा रहा है। इस इंडेक्स में खुशी की पुनर्स्थापना का काम कोई कर सकता है तो वह सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ है।

'हर पत्थर की तकदीर बदल सकती है, शर्त है कि उसे सलीके से संवारा जाये' ऐसा कहना था **स्वामी चिदानंद जी** का ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना की 80वीं सालगिरह पर। उन्होंने कहा कि हमारी दादी जानकी ने देश को एक आत्म-ऊर्जा का मंत्र दिया। जब बसंत आता है तो मौसम में बहार आती है और जब कोई संत आता है तो जीवन में बहार आती है। उन्होंने प्रकृति की सुरक्षा के लिए पेड़ लगाने का भी संकल्प सबको दिया। जो आज भारत सरकार 'मेक इन इंडिया' का मंत्र लेकर चल रही है उस संकल्प की नींव दादा लेखराज ने 80 वर्ष पूर्व ही रख दी थी।

न्यूज़ 24 की एडिटर इन चीफ अनुराधा प्रसाद ने कहा कि आज मैं ये महसूस कर रही हूँ कि मैंने यहाँ देर से आकर कितना कुछ खोया है, यह मेरा संस्था के साथ पहला संपर्क है। संस्था ने विश्व में जो चेतना जगाई है वह अनुकरणीय है। हर चीज़ को यहाँ पवित्रता के साथ आगे बढ़ाया जाता है। राष्ट्र नीति में भी ब्रह्माकुमारीज़ अपना योगदान दे सकती है।

डॉ. लोकेश मुनि ने कहा कि नारी-शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य आबू में संचालित हो रहा है, यह विश्व के अंदर कहीं भी नहीं है। इस परिवार का महामंत्र है तेरा सो तेरा मेरा भी तेरा। ये बहनें स्वार्थ से उठकर समाज निर्माण का कार्य कर रही हैं। दादी जानकी को भारत रत्न नहीं बल्कि नोबेल पुरस्कार से नवाज़ा जाना चाहिए।

वरिष्ठ पत्रकार संजय कुलश्रेष्ठ ने कहा कि हमें नकारात्मकता के फ्रेम को अपने मस्तिष्क से हटाना होगा। हमारा दिमाग एक-एक सूचना को लेता है। ऐसे में हमें, उस फ्रेम को हटाना होगा जो हमें आध्यात्म से दूर ले जाए और अर्थ का अनर्थ करे।

ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि सदा अच्छे व सुखदायी कर्म करने चाहिए। परमात्मा को अपना सबकुछ मानकर उनकी बातों को जीवन में लायें। इससे जहां आत्म-बल बढ़ेगा वहीं खुशी भी मिलेगी। जैसा कर्म हम करेंगे हमें देख और करेंगे।

नवग्रह टी.वी. के सी.ई.ओ. आर. सी. रैना ने कहा कि भारत में शिक्षा, सामाजिक परिवेश एवं राजनीति में बदलाव की अति आवश्यकता है। जब सब लोग कहते हैं कि परमात्मा एक है तो इतना मत-मतांतर, धर्म-पंथ मान्यताएं आदि क्यों? हम कहते हैं हम सब एक हैं तो इस बात में कुछ त्रुटि तो नहीं। यदि भगवान हर जगह होगा तो समस्या तो होंगी ही नहीं। मैं इतने समय से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ तो मेरे अंदर भी काफी बदलाव आया है। यहाँ से सभ्य समाज का निर्माण अति सहज तरीके से हमारी बहनें कर रही हैं। मैं इनको इस अवसर पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

फॉरेन कॉरसपोन्डेंट्स क्लब ऑफ साउथ एशिया इन इंडिया के प्रेसिडेंट एस. वेंकट नारायण ने कहा कि भारत की संसद को ब्रह्माकुमारीज़ के यहाँ जैसी शांति की ज़रूरत है। उन्होंने उम्मीद जताई कि संस्थान विश्व के अशांत देशों जैसे सीरिया, ईराक आदि को भी शांति का संदेश दे।

ब्रह्माकुमारीज़ रिट्रीट सेंटर न्यूयार्क की डायरेक्टर ब्र.कु. डोरोथी, मैक्सिको के पूर्व संसद सदस्य अर्नेस्टो कैस्टेलेनस ने कहा कि भारत विश्व की आध्यात्मिक शक्ति है। इस दौरान अतिथियों की मौजूदगी में दादी जानकी ने केक काटकर सभी को बधाई दी। संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने आभार व्यक्त किया।

विश्व का परिवर्तन ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग द्वारा ही संभव - कलराज मिश्र

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री कलराज मिश्र। मंचासीन हैं सभी विशिष्ट तथा गणमान्य अतिथिगणों के साथ दादी जानकी, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. गोदावरी तथा ब्र.कु. सुषमा।

शांतिवन-आबूरोड। हम परस्पर संवेदनशील रहकर, खुद का आत्मिक विकास कर राष्ट्र का विकास कर सकते हैं। परस्पर सकारात्मक भाव हो, शिक्षा में अध्यात्म व आत्म-शक्ति का समावेश हो तो हम आसुरी शक्तियों का नाश कर देंगे। आध्यात्मिकता का पाठ्यक्रम में समावेश होगा तो सभी समस्याएँ अपने आप समाप्त हो जाएंगी। उक्त उद्‌गार केंद्रीय लघु, सूक्ष्य एवं मध्यम उद्योग मंत्री कलराज मिश्र ने व्यक्त किए।

केंद्रीय मंत्री मिश्र ने कहा कि भारत के माध्यम से यदि विश्व को बदलना है तो ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग से ही संभव है। राजयोग सही मायने में जीवनशैली है, जो शरीर को स्वस्थ रखने और जीवन को मर्यादित चलाने की सीख देती है। प्यार, श्रद्धा, समर्पित भाव और ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आदर्श व्यवस्था से शक्ति को केंद्रित कर हम जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं। यह संस्था सृष्टि सृजन का कार्य कर रही है।

मांगने से मरना भला

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि परिवर्तन तभी संभव होगा जब हम अपने अंदर झाँकेंगे और साइलेंस को अपनी शक्ति बनाएंगे। इससे स्वयं के परिवर्तन की प्रकिया शुरु होगी। दिव्यता, मधुरता ज्ञान, योग, सेवा और धारणा जीवन में होगी तो कदम-कदम में पदमों की कमाई होगी। भगवान की ताकत है, मेरा भाग्य है। खुशी जैसी खुराक नहीं। बाबा ने सिखाया है मांगने से मरना भला।

शांति के लिए सबको ट्रेनिंग की ज़रूरत

महाराष्ट्र के पशुपालन एवं डेयरी मंत्री महादेव जानकर ने कहा कि सभी मंत्रियों को यहाँ ट्रेनिंग दी जाए तो भारत अच्छा बन जाएगा। शांति के लिए इस संस्था ने धर्म और विज्ञान का संगम किया है।

राष्ट्र का निर्माण चरित्र से ही संभव

दादीजी के प्रति आभार प्रकट करते हुए समाज सुधारक एवं कवि डॉ. लोकेश मुनि ने कहा कि मन की ममता जब ईश्वर से जुड़ती है तो दादा लेखराज जैसा व्यक्ति पैदा होता है। राष्ट्र की सुरक्षा केवल सीमा से नहीं, बल्कि चरित्र से होती है जिसका निर्माण दादी माँ कर रही हैं।

स्पेस में है 'ओम्' की आवाज़

प्रख्यात वैज्ञानिक एवं सी.ई.पी.टी.ए.एम. के चेयरमैन ललित कुमार ने कहा कि विज्ञान में हम हर बात तर्क की कसौटी पर परखते हैं, लेकिन आध्यात्मिकता ऐसी चीज़ है जिसका साक्षात्कार इससे हो गया, उसके पास अभिव्यक्त करने के लिए न शब्द होंगे और न तर्क होंगे। विज्ञान की सीमा सिर्फ दिमाग तक है, लेकिन अध्यात्म असीमित है स्पेस में यदि कोई आवाज़ है तो वह 'ओम्' है।

ओम् शांति की आज दुनिया को ज़रूरत

वरिष्ठ पत्रकार राजीव रंजन नाग ने कहा कि ओम शांति मात्र दो शब्द हैं, लेकिन दुनिया को आज इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा संगठन है जिसे मीडिया ने जगह दी है और यह भी लगातार मीडिया के संपर्क में है।

वक्ताओं एवं अतिथियों ने भी रखे अपने विचार

ब्रह्माकुमारीज़ रसिया के सेवाकेंद्रों की क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी ने कहा कि जब दुनिया अशांति के घोर अंधकार से घिर जाती है तो ऐसे समय में स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर आते हैं। परमात्मा कहते हैं कि एक मुझसे नाता जोड़ लें तो सब दु:खों से दूर हो जाएंगे।

श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,पुरी ओडिशा के कुलपति प्रो. राधामाधव दास ने कहा कि यहाँ बहुत ही सरल एवं स्वाभाविक रूप से कार्य हो रहे हैं। ये सीखने की बात है। आज इस दुनिया के अशांति के माहौल में शांति प्रदान करने का काम ये संस्था ही कर सकती है।

यूनाइटेड न्यूज़ न्यूयॉर्क के संपादक डॉ. एम.एच. ग़ज़ाली ने कहा कि दादा लेखराज ने जो शांति का मिशन शुरू किया है वो आज दुनिया में शांति का पैगाम दे रहा है। सिवाए भारत के दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है जो विश्व गुरू बन सके। एक जर्नलिस्ट की आदत होती है सब जगह कमियाँ देखने की, लेकिन मैं यहाँ कोई कमी नहीं ढूंढ़ पाया।

छपते-छपते ताज़ा टी.वी. के चीफ एडिटर एवं चेयरमैन विशम्भर नेवाड़ ने कहा कि हमारा देश अध्यात्म का देश है। यहाँ इतनी शांति से जो संचालन हो रहा है, वह बिना परमात्मा की शक्ति के संभव नहीं है।

ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर ज़ोन की ज़ोनल निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा ने डायमण्ड हॉल में दस हज़ार से अधिक भाई-बहनों को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई।

संस्था के साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग के नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. मोहन सिंघल ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। वहीं श्रीरंगम भरतनाट्यम त्रिची और त्रिमालय नाट्य निकेतन चेन्नई की बालिकाओं ने 'खिली धरती, खिला आसमा' गीत पर आकर्षक प्रस्तुति दी।

इनका किया सम्मान एवं अभिनंदन

कार्यक्रम संयोजक ब्र.कु. मृत्युंजय ने वरिष्ठ पत्रकार राजीव रंजन, वैज्ञानिक ललित कुमार, डॉ. एम.एच. गज़ाली, न्यूज़ वर्ल्ड इंडिया के मैनेजिंग एडिटर अनिल राय, समाचार वार्ता के ग्रुप एडिटर राजीव निशाना का उनके अपने क्षेत्र में विशेष योगदानों हेतु शॉल ओढ़ाकार, प्रशस्ति पत्र भेंटकर एवं शील्ड देकर सम्मानित किया। शांतिवन के इंजीनियर ब्र.कु. भरत ने आभार प्रदर्शित किया।

मानवता सबसे बड़ा धर्म : उपराज्यपाल किरण बेदी

माउण्ट आबू को स्पीरिच्युअल सिटी बनाने का रखा गया प्रस्ताव

पॉन्डिचेरी की उपराज्यपाल किरण बेदी को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर तथा शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय।

किरण बेदी ने दी सलाह - प्रशासनिक अफसरों को इस ज्ञान की बेहद ज़रूरत

कार्यक्रम के समापन सत्र में सम्बोधित करते हुए पॉन्डिचेरी की उपराज्यपाल किरण बेदी। मंचासीन हैं ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. बृजमोहन, सामाजिक न्याय एवं विकास केंद्रीय राज्यमंत्री रामदास बंदू अठावले, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. पाण्ड्यामणि तथा अन्य विशिष्ट अतिथि।

शांतिवन। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 80वीं वर्षगांठ पर 'परमात्म शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तन' विषय पर आयोजित चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन सत्र में सम्बोधित करते हुए पॉन्डिचेरी की उपराज्यपाल किरण बेदी ने तिहाड़ जेल का अनुभव सुनाते कहा कि वहां के कैदियों को ब्रह्माकुमारी बहनों ने जब राजयोग का प्रशिक्षण दिया तो इससे कई कैदियों में बुराई की आदत छूट गई। कई कैदी-बंदियों ने द्वेष भावना छोड़ दी, लड़ना-झगड़ना छोड़ दिया और सकारात्मकता की ओर बढ़ने लगे। ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें हमेशा ईमानदारी, सच्चाई, सफाई, पवित्रता और सेवाभाव के साथ मानवता की सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे जहां जहां सफलता मिली, इसमें आपका ही आशीर्वाद रहा। मैं मानवता और ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करती हूँ।

तनाव में जी रही आज की युवा पीढ़ी

उपराज्यपाल बेदी ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के चलते आज की युवा पीढ़ी तनाव में जी रही है। पहले उन्हें एक अच्छा इंसान बनाना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

'चौथी दुनिया' के एडिटर ने रखा स्पीरिच्युअल सिटी बनाने का प्रस्ताव

महासम्मेलन के समापन में 'चौथी दुनिया' के एडिटर संतोष भारतीय ने प्रस्ताव रखा कि माउंट आबू को हिंसा व शराब से मुक्त क्षेत्र बनाकर आध्यात्मिक नगर घोषित किया जाए। यहां प्राकृतिक तौर पर वातावरण विकसित किया जाए। साथ ही यहां ऐसा वातावरण बने कि इसे देश-दुनिया का आध्यात्मिक नगर के नाम से जाना जाए। इस पर सभा में मौजूद दस हज़ार से अधिक लोगों ने इस प्रस्ताव पर ताली बजाकर समर्थन दिया।

भारतीय ने कहा कि महिलाओं एवं नौजवानों को आध्यात्मिक रूप से विकसित करने के लिए हम पूरी ताकत लगा देंगे। उन्होंने कहा कि हम राज्य एवं भारत सरकार से इसका अनुरोध करेंगे कि इसमें सहयोग प्रदान करें।

'इंसानियत' हर व्यक्ति की ज़रूरत

स्पीरिच्युअल सिटी बनाने के प्रस्ताव का सामाजिक न्याय एवं विकास केंद्रीय राज्यमंत्री रामदास बंदू अठावले ने समर्थन करते हुए इसे भारत सरकार से पास कराने में हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

उन्होंने कहा कि इस संस्था द्वारा मानव को मानव बनाने, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पर्यावरण बचाओ आदि समाजसेवा के आंदोलन चलाए जा रहे हैं जो बहुत ही सराहनीय कदम हैं। मेडिटेशन से मन की शांति प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मानव को मानव बनाने का कार्य किया जा रहा है। यह कार्य असाधारण है।

वहीं शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने माउण्ट आबू को आध्यात्मिक सिटी बनाने के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से इसे पूरा करने की मांग की। साथ ही विश्वास दिलाया कि हम माउण्ट आबू को विश्व की आध्यात्मिक नगरी के लिए पहचान बनाएंगे।

किरण बेदी के सुझाव

- ऐसे इंस्टीट्यूशन्स नि:शुल्क खोलें जहां युवाओं को अच्छे ऑफिसर बनाने की शिक्षा दी जाए।
- पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में इस ज्ञान की बेहद ज़रूरत है। क्योंकि ऑफिसर्स में वैल्यूज़ होंगे तो पूरा सिस्टम ईमानदारी से काम करेगा।
- न्यू इंडिया, मूल्यनिष्ठ पब्लिक सर्वेंट से ही बनेगा।
- ज़रूरतमंद लोगों में सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देने में ब्रह्माकुमारी संस्थान सक्रिय भूमिका निभाए।
- सभी अपना कार्य सेवा समझकर करें तो देश बदल जाएगा।

ज्ञान से होती है विचारों की सफाई: ब्र.कु. लक्ष्मी

ब्रह्माकुमारीज़ मैसूर की सबज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी ने कहा कि यहां के ज्ञान से तन और मन के विचारों की सफाई हो जाती है। ब्रह्मा बाबा और दादियों की अथक मेहनत और परिश्रम से ही संस्था में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित हुई, जिससे यहाँ बहुतों का जीवन बदला।

संकल्प बदलो, संसार बदल जाएगा: ब्र.कु. दिव्यप्रभा

बोरीवली मुंबई की सबज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा ने कहा कि सत्यता से दूर जाने पर कभी जीवन में सुख नहीं हो सकता। आध्यात्मिकता से हमारे संकल्प बदल जाते हैं। जब हम परमात्मा के समीप जाते हैं तो हमें सत्यता की शक्ति मिलती है। अपने संकल्पों के संसार को बदलो, ये संसार स्वत: बदल जाएगा।

हम सब एक ही पेड़ के फूल हैं: डॉ. मर्चेंट

लोट्स मंदिर बहाई कम्युनिटी ऑफ इंडिया के नेशनल ट्रस्टी एवं जनरल सेक्रेट्री डॉ. ए.के. मर्चेंट ने कहा कि आज हमारे सामने पाँच प्रमुख समस्याएं हैं- जलवायु परिवर्तन, आर्थिक समस्या, परमाणु हथियार, मानव अधिकार तथा संसाधनों का गलत दोहन। इनके बचाव के लिए हमें मिलकर काम करना होगा। हम सब एक ही पेड़ के फूल हैं और समस्त पृथ्वी एक देश है।

सोलर पावर प्लांट से कर रहे ऊर्जा बचत: ब्र.कु. गोलो

इंडिया वन सोलर थर्मल पावर प्रोजेक्ट के हेड ब्र.कु. गोलो पिल्ज़ ने कहा कि यहां के योग और मेडिटेशन से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। हमारा मकसद अध्यात्म और विज्ञान के बीच समन्वय बनाना है। ब्रह्माकुमारीज़ में ये इनोवेटिव पावर प्लांट भारत एवं जर्मनी सरकार के सहयोग से लगाया गया है। ये प्रोजेक्ट देश के अंदर ऊर्जा की बचत के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। 25 से अधिक एनर्जी प्रोजेक्ट पर यहां रिसर्च किया जा रहा है। मैंने शोध कर एक सौर ऊर्जा पर पुस्तक भी लिखी है जिसमें ऊर्जा की बचत के उपाय बताए गए हैं।

यहां से होगा विचारों का परिवर्तन: ब्र.कु. संतोष

महाराष्ट्र ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष ने कहा कि परमात्मा ने जब ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार कराया और आदेश दिया कि तुम्हें नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करनी है तो उन्होंने तुरंत अपनी धन-दौलत छोड़ इस कार्य में लग गए। खुद के परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन किया जा सकता है।

शक्ति निकेतन,इंदौर होस्टल की कुमारियाँ नृत्य की प्रस्तुति देते हुए।

कार्यक्रम की शुरुआत मधुर गीत द्वारा

चार दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम सत्र की शुरुआत मधुरवाणी ग्रुप के 'ये बधाई की बेला शुभारंभ है....' गीत द्वारा हुई। इस गीत को सुनकर सभी भाव-विभोर हो गए। इसके बाद श्रीरंगम भरतनाट्यालय त्रिची की बालिकाओं ने स्वागत नृत्य 'आपके आने से हर दिल में रुहानी रौनक है...' प्रस्तुत किया। इस उत्कृष्ट प्रस्तुति पर ब्र.कु. मृत्युंजय ने बालिकाओं सहित शिक्षिका का सम्मान किया। डिस्टेंस एज्युकेशन प्रोग्राम के डायरेक्टर डॉ. ब्र.कु. पाण्ड्यामणि ने सभी का स्वागत किया। जयपुर की सबज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. पूनम ने राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। समापन पर योग से संबंधित प्रेरणा पुस्तक का विमोचन अतिथियों ने किया।

सामाजिक परिवर्तन की ओर उत्कृष्ट आंदोलन ब्रह्माकुमारीज़

मूल्यनिष्ठ दृष्टिकोण के बिना समाज परिवर्तन संभव नहीं : राज्यपाल कोहली

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर। साथ हैं वी.के. सारस्वत, कविन्द्र गुप्ता, ब्र.कु. रानी, ओ.पी. कोहली तथा ब्र.कु. चक्रधारी। सभा में विशाल संख्या में लोग ध्यानपूर्वक सुनते हुए।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्था अद्वितीय व बेमिसाल है। ब्रह्माकुमारीज़ एक सामाजिक परिवर्तन का आंदोलन है। राजनीतिक आंदोलन करना आसान होता है, लेकिन आध्यात्मिक आंदोलन की राह बहुत कठिन होती है। ब्रह्माकुमारीज़ के इस समाज को बदलने के आंदोलन को मैं नमन करता हूँ।

गुजरात के राज्यपाल ओ.पी. कोहली को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर तथा शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय।

उक्त उद्‌बोधन गुजरात के राज्यपाल ओ.पी. कोहली ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक महोत्सव में व्यक्त किये। राज्यपाल कोहली ने पर्यावरण, विज्ञान, अध्यात्म और परंपराओं के संरक्षण, उनके पुनर्जीवन एवं स्त्री शिक्षा का समावेश करते हुए इसे जन आंदोलन का रूप देने वाली संस्था के रूप में इस पहल की तारीफ की। उन्होंने बढ़ते भौतिकवाद, अलगाववाद पर चिंता जताते हुए कहा कि परिवर्तन का यह आंदोलन ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं के माध्यम से ही हो सकता है। उपभोक्तावाद हर क्षेत्र में हावी हो गया है, ऐसे में आज ज़रूरत है परमपिता के प्रकाश को महसूस करते हुए अपने जीवन को रूपांतरित करने की। परिवर्तन की यह शुरुआत परमपिता की सत्ता और उसमें असीम आस्था से ही हो सकती है। हम जिन्हें जीवन मूल्य कहते हैं, वे सब इसी पर आधारित हैं। व्यक्ति को यह समझने की मूल्यदृष्टि दी जाए कि वह किसे चुने, किसे नहीं चुने। भारत का समाज बेहतर व आध्यात्मिक बने, इसके लिए ऊँचे संस्कार और मूल्यों की शिक्षा ज़रूरी है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की पुनर्स्थापना ज़रूरी है।

ब्रह्मा बाबा ने पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना कर दी: भीखू संघसेना

अंतर्राष्ट्रीय महाबोधि योग केंद्र लद्दाख के संस्थापक एच.एस. भीखू संघसेना ने कहा कि महिलाएँ जीवन के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, यह ब्रह्माकुमारीज़ ने साबित कर दिया है। इसके संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना कर दी। स्वर्ग और नर्क मस्तिष्क की ही अवस्थाएँ हैं। यहाँ आकर हम अद्‌भुत स्वर्ग की अनुभूति करते हैं। हम सब खुशियाँ बाहर ढूंढ़ते हैं, मगर यह हमारे भीतर ही छिपी हैं।

साधना के साथ शक्ति ज़रूरी: कवीन्द्र गुप्ता

जम्मू-कश्मीर के विधानसभा अध्यक्ष कवीन्द्र गुप्ता ने कहा कि 80 वर्ष पहले जो पौधा लगाया था, आज वो वटवृक्ष बन गया है। हमारे जीवन में साधना के साथ शक्ति होनी ज़रूरी है। आज विश्व में भारत के प्रति सम्मान बढ़ा है। हमारी माताओं व शिक्षकों को राष्ट्र निर्माण में आगे आना होगा।

परमात्मा कर रहे संस्था का संचालन: वी. ईश्वरैया

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष एवं पूर्व न्यायाधीश वी. ईश्वरैया ने कहा कि जो खुद को और खुदा को नहीं जानते हैं, वे ही नास्तिक हैं। खुद को समझने, अर्थात् आस्तिक बनाने का काम ब्रह्माकुमारी संस्थान कर रहा है। इस संस्था का संचालन स्वयं सर्वशक्तिमान, निराकार परमात्मा कर रहे हैं। परमात्मा तो अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता हैं। वह प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लेकर नई सतयुगी दुनिया की स्थापना का कार्य करते हैं।

दुनिया को अध्यात्म की ज़रूरत: डॉ. वी.के. सारस्वत

रक्षा मंत्रालय के सलाहकार व पूर्व डायरेक्टर जनरल डी.आर.डी.ओ. व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी.के. सारस्वत ने कहा कि मैं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आया। उनके जीवन में साइंस और अध्यात्म का अद्‌भुत संयोजन था। हमने मानव मन पर अध्यात्म के प्रभाव का अध्ययन भी किया। आज दुनिया को अध्यात्म ज्ञान की बेहद आवश्यकता है।

मीडिया के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने भी रखे अपने विचार-

- पी.टी.सी. न्यूज़ के ग्रुप एडिटर शैलेष कुमार ने कहा कि पत्रकार के तौर पर मैंने धार्मिक संस्थाओं को नज़दीक से देखा है। सच पूछो तो दुकान और बाज़ार ही दिखता है। लेकिन यह संस्थान आज भी सिर्फ और सिर्फ सामाजिक संस्थान के रूप में है। मैं इसके लिए दादी को नमन करता हूँ। आज लोगों को ओम् शांति की बहुत ज़रूरत है।

- दिशा टी.वी. की एम.डी. डॉ. अर्चिका ने कहा कि इस धरती पर जिया कैसे जाए यह मनुष्य ने सीखा ही नहीं है। सुख, समृद्धि का आधार शांति है। शांति के बिना कुछ भी नहीं। इस समय मनुष्य को शांति की ज़रूरत है, वह मुस्कुराना भूल गया है। आगे बढ़ना चाहते हो तो शांत होना सीखो। वर्ल्ड ट्रांसफॉर्मेशन चाहते हैं तो इनर ट्रांसफॉर्मेशन शुरू कीजिए। चीज़ो को पकड़ कर मत बैठिये, माफ करना सीखिये।

- सब टीवी ग्रुप के वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर मार्कंडेय अधिकारी ने कहा कि आज जहाँ परिवार की परिभाषा व परिधि दिनों दिन सिमटती जा रही है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की जितनी तारीफ की जाए, कम है। आज के वैश्विक, वैचारिक संकट के दौर को बचाने में संस्था का प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने मीडिया से आह्वान किया कि सभी पत्रकार व मीडिया देश में जो कुछ अच्छा हो रहा है, उसे पॉज़ीटिव रूप में दिखाना चाहिए।

- गवर्नेंस नाउ के निदेशक कैलाश अधिकारी ने कहा कि खुशी हमारे भीतर है जो आज व्यक्ति भूल चुका है। सांसारिक परेशानियों से समय निकाल कर आत्म-चिंतन के लिए समय ज़रूर निकालें। अंतर्मन ही पीस ऑफ माइंड है।

रक्षा मंत्रालय के सलाहकार व पूर्व डायरेक्टर जनरल डी.आर.डी.ओ. व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी.के. सारस्वत को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. निर्वैर तथा ब्र.कु. मृत्युंजय।

इसका एहसास ब्रह्माकुमारीज़ में होता है।

स्वागत नृत्य से की शुरुआत

कार्यक्रम के आरंभ में रजनीराजा कलाक्षेत्रम् विजयनगरम की छात्राओं ने स्वागत नृत्य 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' प्रस्तुत किया। इसके बाद चेन्नई के ख्यातिप्राप्त गायक रामू महाराजापुरम ने गीत सुनाया। शांतिवन के चार्टर्ड एकाउंटेंट ब्र.कु. ललित ने आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। महासविच राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर ने संस्थान के 80 वर्षों के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि बाबा ने शुरू से ही नारी शक्ति को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम के दौरान यूथ विंग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. चंद्रिका ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। मेडिकल विंग के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. बनारसीलाल शाह ने आभार प्रदर्शित किया। मीडिया की इन शख्सियतों को संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने सम्मानित किया।

माननीय राज्यपाल के आगमन पर उनके स्वागत में नृत्य करते हुए भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आई कलाकार बालिकाएं।

ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति की जड़ें कर रहा मज़बूत

▶ नॉर्थ ओडिशा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति ने राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को प्रदान की डॉ. ऑफ लिटरेचर की उपाधि

- राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित

कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. शील, राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित, श्रीमति पुरोहित, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. सत्यनारायण तथा विशिष्ट अतिथिगण।

संस्था की अति. मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी को डॉ. ऑफ लिटरेचर की उपाधि प्रदान करते हुए नॉर्थ ओडिशा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा। साथ हैं ब्र.कु. मृत्युंजय व अन्य।

शांतिवन। आज धर्म के नाम पर बंटवारे हो रहे हैं। हमारी संस्कृति में कहीं जाति-धर्म का उल्लेख नहीं है। विश्व में कई संस्कृतियां आईं और चली गईं। लेकिन हमारी संस्कृति आज भी टिकी हुई है, इसका कारण अध्यात्म है। ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय उसी भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने का काम कर रही है। उक्त उद्‌गार असम-गुवाहाटी के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक महोत्व में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि इस वातावरण में आकर मुझे बहुत सुखद अनुभूति हुई। ये संस्था राष्ट्रनिर्माण का कार्य कर रही है। ऐसे संगठन से जुड़ा रहना बड़ी बात है। यहां के ज्ञान और आध्यात्मिकता को देखकर हमारी आँखें खुल गईं। सत्य निष्ठा के साथ किये जा रहे कर्मों में ही ईश्वर का साथ रहता है।

राजयोग अपनाने से ही होगी जीवन में शांति : जस्टिस कार्की

नेपाल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मोहन बहादुर कार्की ने कहा कि मैं 30 साल से संस्था से जुड़ा हूँ। आज लोगों के जीवन में धन-दौलत है, लेकिन शांति नहीं है। शांति के लिए राजयोग के अलावा और कोई दूसरा उपाय नहीं है। एकमात्र राजयोग से ही शांति की अनुभूति होती है। यहां के सात दिन का कोर्स सभी को सीखना चाहिए। राजयोग के अभ्यास से हमारी लाइफस्टाइल चेंज हो जाती है।

असम के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर तथा शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्यंजय। साथ हैं श्रीमति पुरोहित।

कार्यक्रम के दौरान आध्यात्मिक गीतों पर सुंदर प्रस्तुति देते हुए रशिया की कलाकार बहन।

यहां मैंने शांति की अनुभूति की: सिवेद साहनिया

एडिटर सिवेद साहनिया ने कहा कि यहां से शांति और प्रेम का संदेश दुनियाभर में दिया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ में जो परमात्म ज्ञान दिया जा रहा है, इससे निश्चित ही मनुष्य में परिवर्तन होता है। यहां मैंने दो दिन रहकर शांति की गहन अनुभूति की। साथ ही प्रेम और भाईचारा देखने को मिला।

स्व परिवर्तन से होगा विश्व परिवर्तन: कोंडल रॉव

लैम्बो ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ हैदराबाद के चेयरमैन कोंडल रॉव ने कहा कि स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व परिवर्तन का महान कार्य कर रही है। यहां से प्राप्त होने वाला ज्ञान बहुत ही गहरा और अद्‌भुत है। मैं इस संस्था से 25 वर्ष से जुड़ा हुआ हूँ। समाज में जो नेगेटिव विचार हैं उन्हें परिवर्तन करने में ये संस्थान नि:स्वार्थ भाव से लगा हुआ है।

पवित्रता की शक्ति से होगा विश्व परिवर्तन: ब्र.कु. अमीरचंद

सोशल सर्विस विंग के अध्यक्ष ब्र.कु. अमीरचंद ने कहा कि विश्व परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है, जो इस समय ईश्वरीय, परमात्म शक्ति के निर्देशन में ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से किया जा रहा है। पवित्रता की शक्ति ही मूल शक्ति है जो इस विद्यालय की ओर सभी को खींच रही है। पवित्रता की शक्ति से ही शांति की स्थापना होगी।

परमात्मा ने खुशियों से भर दिया दामन : ब्र.कु. गोदावरी

ब्रह्माकुमारीज़ मुंबई मुलुंद की सबज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. गोदावरी ने कहा कि हमेशा ऐसा महसूस होता है कि परमात्मा कदम-कदम पर साथ चल रहा है। यह कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा का है। इस यात्रा को आज 80 साल हो गए हैं। परमात्मा ने जीवन में इतनी खुशी और शांति भर दी है कि अब और कुछ पाना बाकी नहीं रह गया।

दादी को डॉ.ऑफ लिटरेचर की उपाधि से नवाज़ा

नॉर्थ ओडिशा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को डॉ. ऑफ लिटरेचर की उपाधि प्रदान की। उन्होंने कहा कि दादी ने ओडिशा में संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता और प्रभु के संदेश का प्रचार-प्रसार किया है जो बहुत ही सराहनीय है।

मीडिया जगत की नामचीन हस्तियों को किया सम्मानित

मेट्रो व मेघा टी.वी. के चेयरमैन व एम.डी. के. जयाप्रसाद, चौथी दुनिया के एडिटर संतोष भारतीय, एस.लाइव चैनल के ग्रुप एडिटर अजय दवे, वरिष्ठ पत्रकार भव्य श्रीवास्तव आदि गणमान्य अतिथियों को मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदानों हेतु 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। साथ ही नेपाल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मोहन बहादुर कार्की, नॉर्थ ओडिशा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा तथा अभिनेता जीतू वर्मा का भी सम्मान किया गया। एडवोकेट ब्र.कु. लता ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन गुड़गांव की ब्र.कु. उर्मिल ने किया। राजयोग की दिव्य व गहन अनुभूति ज्ञान सरोवर की ब्र.कु. सुमन ने कराया। पीस न्यूज़ के न्यूज़ एडिटर एवं संस्था के पी.आर.ओ. ब्र.कु. कोमल ने सभी अतिथियों एवं सभा में उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान सुंदर नृत्य प्रस्तुति देते हुए प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह तथा साथी कलाकार।

सुंदर नृत्य की प्रस्तुति के बाद कलाकार बालिकाओं को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह देने के पश्चात् उनके साथ समूह चित्र में दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।

नवरात्रि क्या सिर्फ भक्ति के लिए है

आज लोग शक्तियों की भक्ति तो करते हैं, लेकिन उनकी तरह शक्तिशाली नहीं बनते। नवरात्रों में मिट्टी के दीपक क्या जलाने के लिए हैं या उनकी तरह सदा जागती ज्योत शिव परमात्मा से शक्ति लेकर अपनी आत्मा की ज्योति जगानी है। भक्तजन खुद कहते हैं कि वो शाक्तियाँ तपस्विनी थीं, ब्रह्मचारिणी थीं, इसलिए नवरात्रों में वो प्रमुख रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, परंतु फिर से पतित हो जाते हैं। आप सोचो ज़रा, जिनको वो माँ मानते हैं, तपस्विनी मानते हैं, उनकी जैसी कन्याओं, माताओं के प्रति बुरी दृष्टि रखते हैं। अरे, उनकी तरह कुछ पवित्र बनें तब तो पूजा और भक्ति कुछ सफल हो। वे दस बारह घंटे अपने आप को भक्ति में,

आराधना में लीन करते हैं। बाकि के समय कहते हैं, ये तो कलियुग है, इसमें पवित्र बनना असंभव है। अरे मानव! थोड़ी अपनी बुद्धि का इस्तेमाल तो करो, जब संकट की घड़ी आती है, तो उस संकट की घड़ी में परिवर्तन के लिए क्या कुछ नहीं करते हैं! और आज इतनी गहरी काली रात सबके मन पर छाई हुई है, सबके अंदर कलह-क्लेष भरा पड़ा है, तो क्या एक नवरात्रि मनाने से कलह-क्लेष मिट जायेगा या निरंतर उस अवस्था में रहना होगा! इस कलियुग की रात्रि में अपने आपको शाब्दिक स्तुति से निकालकर सच्चा ज्ञानवान बनाना चाहिए, तब जाकर आप अपने अंदर छुपे आसुरी गुणों का संहार कर पाएंगे, आपके अंदर शक्ति आएगी। अगर इस रात्रि में परमात्मा शिव द्वारा दिए ज्ञान से आप जागेंगे नहीं तो आप शक्ति कैसे पाएंगे!

जीवन में हर्ष कैसे बना रहे?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

किसी ने कहा है कि मनुष्य और पशु में यह मुख्य भेद है कि मनुष्य तो हँसता है, परन्तु पशु नहीं हँसता। अगर यह सच है तो उस मनुष्य को पशु-तुल्य ही कहेंगे जो हँसता नहीं है। अगर यह सच नहीं है, अर्थात अगर यह कहा जाय कि पशु भी अपनी तरह से हँसते हैं, तब तो वह मनुष्य जो नहीं हँसते अथवा नहीं मुस्कराते, वे पशु से भी अधिक दुर्भाग्यशाली हैं।

हँसना भी मन में हर्ष होने की एक निशानी है। हर्ष तो हरेक मनुष्य अपने जीवन में चाहता है, परन्तु किन्हीं कारणों से उसका मन विक्षिप्त हो उठता है। मन को हर्षित अवस्था में लाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और योग एक मुख्य साधन है, परन्तु देखा गया है कि मनुष्य का योग भी तभी ठीक प्रकार से लगता है जब मनुष्य हर्षित अथवा मुदित अवस्था में हो। यद्यपि इस कलियुगी दुनिया में तथा विकारी जीवन में दु:ख देखने के बाद ही मनुष्य योग का आधार ढूँढ़ता है, परन्तु यदि मनुष्य के मन में दु:ख, शोक, अफ़सोस, खेद, चिन्ता आदि की लहर रहे तो उसका मन एकाग्र नहीं हो पाता और योग में भी उसकी एकरस स्थिति नहीं हो पाती। उस अवस्था में यदि मनुष्य परमात्मा को याद करता भी है तो भी उस याद का रंग-ढंग अथवा उसकी रूप-रेखा कुछ और प्रकार की ही होती है। वह याद एक विरह-वेदना, एक मात्र पुकार अथवा एक हीन-दीन की शरण-याचना की तरह होती है जिसमें थोड़ी अशान्ति की लहर का समावेश अवश्य होता है।

उदाहरण के तौर पर एक मनुष्य को जब व्यापार में हानि हो जाती है तब ईश्वरीय स्मृति में मन को एकाग्र करना चाहते हुए भी उसका मन स्थिर नहीं होता। वह योग का रस-पान करने के बजाय इधर-उधर भागता है। उसके

मन में कभी तो यह संकल्प आता है कि मैं अमुक भूल न करता तो इतनी हानि न होती। कभी वह सोचता है कि अब इस हानि को किस प्रकार पूरा करूँ? यह विचार उठता है कि लोग पैसा मांगने आएंगे तो मैं उनको क्या जवाब दूंगा। इस प्रकार धन-हानि के कारण उसके मन में थोड़ी अशान्ति का समावेश होता है। वह ईश्वर को याद भी करता है तो एक भरे हुए अथवा भारी मन से। वह ईश्वरीय स्मृति में रहने का अभ्यास करते हुए या तो ईश्वर से उपालम्भ करता है कि उसने सहायता क्यों नहीं की या उसकी शरण में जाना चाहता है कि अब वह इस विकट परिस्थिति से किसी प्रकार बचाये। तो जिस मनुष्य का मन कल तक सहज ही ईश्वरीय याद में टिक जाता था, आज उसके मन में हर्ष अथवा मोद न होने के कारण उसे मन को स्थिर करने में भी रुकावट महसूस होती है और इस प्रकार योग द्वारा जो आनंद मिलता था, वह भी नहीं मिल पाता।

इसी प्रकार, मान लीजिए कि एक माता ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहती है। परन्तु एक दिन उसका पति, जो कि वासना को छोड़ना नहीं चाहता, उसे बहुत मारता है। अब वह माता योगारूढ़ होने की कोशिश करती है परन्तु आज उसके मन में यह विचार चलते हैं कि– ''पता नहीं यह बंधन कब छूटेगा? जीवन को अच्छा बनाने के कार्य में पता नहीं मेरा पति कब मुझे सहयोग देगा? हे परमपिता शिव, अब आप मेरे भव-बन्धन काट दो, प्रतिदिन की इस यातना से मुझे मुक्त करो! मैं तुम्हारी हूँ, तुम उसकी बुद्धि को शुद्धि दो.....!'' इस प्रकार आज ईश्वरीय स्मृति में स्थित होने के पुरुषार्थ में थोड़ी-सी अशान्ति की लहर का होना सम्भव है। अत: आज उसका योग एक-रस न होकर, इन लौकिक संकल्पों से मिश्रित हो सकता है। तो देखिये, मुदित अथवा हर्षित अवस्था न होने के कारण, ऐसी भूमिका में योग की एक-तानता भी टूट जाती है। यदि पति से हुई ताड़ना को वह किसी तरह तुरन्त ही भुला सके तब उसका हृदय प्रफुल्लित हो जायेगा और वह अमिश्रित एवं अखण्ड योग से आत्मिक सुख में सहज स्थिति प्राप्त कर सकेगी। अत: योग की पूर्ण सिद्धि को प्राप्त करने के लिए हर्षमय अवस्था का बने रहना ज़रूरी है, वरना यदि मन ऊँट की तरह करवट बदलता रहेगा और कभी दायें, कभी बायें झुकता रहेगा तो योग में एकतानता अथवा सम-तल अवस्था नहीं हो सकेगी।

गोरखपुर-उ.प्र.। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय आदित्यनाथ जी महाराज के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. पारुल तथा ब्र.कु. माधुरी।

मथुरा-उ.प्र.। होली मिलन कार्यक्रम में उ.प्र. के ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा का सम्मान करने के पश्चात् ब्र.कु.कुसुम, ब्र.कु.सुमन तथा अन्य।

मलेबेन्नुर-कर्नाटक। 1008 गुलाब के फूलों से बने शिवलिंग की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच.डी. कुमारास्वामी, विधायक शिवशंकर जी, जे.डी.एस. के अध्यक्ष बी.चिदानंदप्पा, ब्र.कु.लीला, ब्र.कु.मंजुला, ब्र.कु.शांता तथा अन्य।

नवी मुम्बई। समाज की सेवा में विशेष योगदान के लिए महिलाओं के सम्मान कार्यक्रम में ब्र.कु.शीला को 'रणरागिनी पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए सांसद राजन विचारे। साथ हैं शिव सहकार सेना की अध्यक्षा शिल्पताई सरपोतदार, कॉर्पोरेटर एम.के. मढ़वी, जिला संघटक रंजना शिंदे तथा अन्य।

मंगरोल-सूरत। पच्चीस गाँवों के नव निर्वाचित सरपंचों का सम्मान करने के पश्चात् ब्र.कु. पूर्णिमा, ब्र.कु. तृप्ति, ब्र.कु. शारदा, मोटा मियाँ मांगरोल के गादिपति मताउद्दीन चिश्ती, डॉ. आशा तथा एन.डी.देसाई हाई स्कूल के आचार्य संजय देसाई सरपंचों के साथ समूह चित्र में।

नरवाना-हरियाणा। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. राजेश, समाजसेवी अनुप गोयल तथा सुरेन्द्र गोयल।

जीवन जीने की कला का आंदोलन है ब्रह्माकुमारीज़

▶ ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं से भारत में नेपाल के राजदूत हुए अभिभूत

▶ शिक्षाविदों, धर्मगुरुओं ने भी बहाई चिंतनधारा

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भारत में नेपाल के राजदूत दीपकुमार उपाध्याय। मंचासीन हैं ब्र.कु. डॉ. सविता, नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह, राजीव निशाना, वदूद साजिद, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. रानी, नेपाल के सांसद भीमसेन दास प्रधान तथा अन्य विशिष्ट अतिथि।

महासम्मेलन के दौरान श्रीरंगम भरतनाट्यालय त्रिची की कलाकार बालिका सुंदर पिकॉक डांस की प्रस्तुति देते हुए।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व के लोगों को शांति और शक्ति के साथ जीवन जीने की कला सिखा रही है। यह अलौकिक और अद्भुत कार्य है। संस्था की विपरीत परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ होने की सीख स्वस्थ और सफल जीवन का आधार है। इस सामाजिक आंदोलन को उत्तरोत्तर समर्थन मिल रहा है, शीघ्र ही यह विश्व व्यापी हो जाएगा। यह उद्गार भारत में नेपाल के राजदूत दीपकुमार उपाध्याय ने ब्रह्माकुमारीज की 80वीं वर्षगांठ पर चल रहे अंतर्राष्ट्रीय महा-सम्मेलन में व्यक्त किए। संस्थान के प्रति बार-बार कृतज्ञता जताते हुए उन्होंने कहा कि शांति की स्थापना पीड़ित मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। ब्रह्माकुमारीज़ में न कोई छोटा है, न बड़ा, यहाँ कोई भेदभाव नहीं है।

धर्मनिरपेक्षता के आधार पर सेवा

नेपाल के सांसद भीमसेन दास प्रधान ने कहा कि यह एकमात्र ऐसा संगठन है जहां धर्मनिरपेक्षता के आधार पर चरित्र का निर्माण किया जाता है। यहां से जुड़ने के बाद जीवन में सुख-शांति आ जाती है। यह विश्व शांति और आत्म शांति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। संस्था बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है।

पत्रकारों को भी मिले राजयोग का प्रशिक्षण : राजीव निशाना

समाचारवार्ता के ग्रुप एडिटर राजीव निशाना ने कहा कि आज शांति की सबसे ज़्यादा ज़रूरत पत्रकारिता जगत को है। पत्रकारों और पत्रकारिता का कोर्स कर रहे विद्यार्थियों को राजयोग का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे खुद जीवन जीने की कला सीख सकें, नकारात्मक विचारों से परहेज करें और समाज को भी सकारात्मक खबरों से प्रशिक्षित करें।

अस्सलाम वालेकुम् और ओम शांति एक ही शब्द

वी.एन.आई. के मुख्य संपादक वदूद साजिद ने कहा कि 'अस्सलाम वालेकुम् और ओम् शांति एक ही शब्द है'। शांति.. शांति और शांति...। साजिद ने कहा कि हज़रत मोहम्मद साहब कहते थे, पूरी कायनात हमारी है... तो ब्रह्माकुमारीज़ अपने शांति व राजयोग के मंत्र से इसी को साकार कर रही है। यहां सभी सुप्रीम गॉड के बच्चे हैं। पूरे विश्व में सेवाएं दे रहे हैं। एक और दृष्टांत में कहा कि मोहम्मद साहब की बेटी फातिमा जब आती थीं तो वे उठकर अपना बिछौना उन्हें दे देते थे। इसी तरह यहां भी नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया जा रहा है। जो काम करोड़ों लोगों को करना था, वो संस्था ने अपने दम पर कर दिखाया है। भारत जैसा सुपर स्पीरिच्युअल पावर कहीं नहीं, जहां ब्रह्माकुमारीज़ जैसा सामाजिक आंदोलन काम कर रहा है।

यहां परमात्मा का होता है दिव्य अवतरण: ब्र.कु. सूर्य

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने कहा कि इसी स्टेज पर परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। इससे चारो ओर शुभ व सकारात्मक बायब्रेशन्स की अनुभूति सभी को होती है। जो देवकुल की आत्माएं हैं और भाग्यवान आत्माएं हैं वही यहां पहुँचती हैं। राजनीति और अध्यात्म के जोड़ से ही भारत फिर से विश्व गुरू बनेगा। अपने चित्त को आध्यात्मिकता से भरते चलें तो जीवन आनंदमय बन जाएगा। यहाँ आपको अच्छा लगा ये बहुत अच्छी बात है, लेकिन अगर आप यहाँ से परमात्म शक्तियों का अनुभव साथ लेकर जाएं और उसके साथ जीवन जीयें तो ये सम्मेलन की सार्थकता होगी।

ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू में जन्नत को देखा: नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह

इमामिया एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह ने कहा कि हम लोग जन्नत, हेवन के बारे में कल्पना करते हैं लेकिन मैंने यहां ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू में जन्नत को देखा है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर शांति, प्रेम, सहयोग की भावना और रौनक देखने को मिली। यहां से दुनिया में इंसानियत का पैगाम दिया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ के उसूल और इस्लाम के उसूलों में काफी समानता है। इस्लाम के पाँच मुख्य सिद्धांत और ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य में समानता दिखती है।

साधना छोड़ने से जीवन में बढ़ी अशांति: ब्र.कु. रानी

बिहार की ज़ोनल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. रानी ने कहा कि मैं 60 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित हूँ, मुझे कभी भी जीवन में कठिनाई नहीं आई। बाबा शांति से जीवन चला रहा है। मनुष्य ने आज भौतिक साधनों का विकास किया है, लेकिन साधना छोड़ दी है। इससे अशांति फैल गई है। जीवन में सुख-शांति व खुशहाली राजयोग से ही संभव है।

स्वचिंतन ही परिवर्तन की कला: ब्र.कु. शुक्ला दीदी

सेक्योरिटी सर्विस विंग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक चेतना से ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण संभव है। ज्ञान प्रकाश, योग का विस्तार और कर्म में निखार हो तो जीवन सहज बन जाएगा। स्वचिंतन, परमात्म चिंतन व सद्गुण ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है। ज्ञान, इच्छाशक्ति और परिवर्तन की कला से ही श्रेष्ठ जीवन बनेगा।

जीवन में देने का भाव भी रखें: ब्र.कु. डॉ. सविता

वुमेन विंग की हेडक्वार्टर को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि यदि आप सदा जीवन में लेते रहेंगे तो यह खारा हो जाएगा। इसलिए देने का भाव भी रखें। राजयोग से जीवन का परिवर्तन हो जाता है। राजयोग के माध्यम से ईर्ष्या, क्रोध, नफरत, द्वेष, नकारात्मकता आदि से छुटकारा पाकर जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है।

महासम्मेलन के दौरान अतिथियों के स्वागत में सुंदर नृत्य प्रस्तुति देते हुए कलाकार बालिकाएँ।

स्वागत गीत से बांधा समाँ...

कार्यक्रम के शुभारंभ पर श्रीलंका से आई बालिका वी. खुशी ने श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन पर आकर्षक नृत्य पेश किया, जिसे देख हॉल तालियों की गडग़ड़ाहट से गूंज उठा। चेन्नई के रामू महाराजपुरम ने स्वागत गीत 'जिन्हें ढूंढ़े थे हम दर-दर, वो भगवान आ पधारे हैं...' की प्रस्तुति दी। वहीं श्रीरंगम भरत नाट्यालय त्रिची की बालिकाओं ने स्वागत मयूर नृत्य की प्रस्तुति दी। अतिथियों का सम्मान संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने स्मृति चिन्ह व पुष्पगुच्छ देकर एवं माला पहनाकर किया। संचालन जयपुर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. चंद्रकला ने किया। गॉडलीवुड स्टूडियो के डायरेक्टर हरिलाल भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बाबा के जीवन पर सुंदर नाटक का मंचन

महोत्सव के तहत डायमंड हॉल में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों ने एक से बढ़कर एक आकर्षक प्रस्तुति दी। मुंबई से आए कलाकारों ने संस्थान के संस्थापक दादा लेखराज कृपलानी से प्रजापिता ब्रह्माबाबा बनने तक की जीवनी पर नाटक का मंचन किया। इसके माध्यम से प्रतिभागियों ने जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए सभी को प्रेरित किया। संस्थान की स्थापना के आदि समय से लेकर अब तक की विभिन्न गतिविधियों को नाटक के ज़रिए प्रदर्शित किया गया। इसमें 70 से अधिक कलाकारों ने संस्था के शुरू से लेकर अब तक की 80 वर्ष की यात्रा और इस दौरान आईं विभिन्न परिस्थितियों, उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।

हम विश्वास करेंगे तो सम्मान दे पायेंगे

गतांक से आगे...

प्रश्न: जब किसी को बार-बार कोई बात कही जाए, और वो नहीं मानता तो हमें उसपर ना चाहते भी गुस्सा आ ही जाता है।

उत्तर: लेकिन इस प्रकार से आज तक कोई नहीं सुधरा है। आप अपनी तरफ से पॉज़ीटिव एनर्जी भेजो बिना यह सोचे कि दूसरी तरफ से क्या आ रहा है। अगर दूसरी साइड से पॉज़ीटिव है तो आपका पॉज़ीटिव उस पर जुड़ने ही वाला है। पॉज़ीटिव और पॉज़ीटिव मिलकर पॉज़ीटिव हो जाते हैं। अगर दूसरी साइड से थोड़ा सा नेगेटिव भी है तो आपका पॉज़ीटिव उसको क्या करेगा धीरे...धीरे... उसको खत्म करेगा। अगर हमने नेगेटिव को नेगेटिव भेजा तो इसका परिणाम क्या होगा? काम कर रहे हैं, काम हो रहा है, लेकिन आपस में कौन सी एनर्जी प्रवाहित हो रही है? नेगेटिव वाली।

ब्र. कु. शिवानी

आज हम किस बिलीफ सिस्टम पर आये कि 'लोगों पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है', आजकल किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए, लोग तो धोखा ही देते हैं' क्यों? क्योंकि हम आपस में कौन सी एनर्जी का आदान-प्रदान कर रहे हैं और इसका दोष हमने तुरंत किस पर डाला? औरों के ऊपर। मेरी कोई जिम्मेवारी थी ही नहीं। लोग सच बोल रहे थे, मैंने ही उन पर विश्वास नहीं किया। विश्वास एक बहुत बड़ी ताकत है जो दूसरे को सशक्त करती है। किसी का विश्वास करना और उसे सम्मान देना ये हमारे हाथ में है। यदि मैं आप पर विश्वास करूंगी तभी मैं आपको सम्मान दे पाऊंगी। अगर हमारे अंदर शक की भावना होगी तो मैं आपको सम्मान नहीं दे पाऊंगी। फिर ये गुस्सा बीच में कहीं भी सेट नहीं होगा। अगर हमारे अंदर गुस्सा है तब हमारे अंदर से विश्वास और सम्मान ये दो गुण हमसे दूर चले जाते हैं।

प्रश्न:- जब हम अपने आपको कहते हैं कि मैं विश्वास कर रहा हूँ। अर्थात् मैं आपकी नेगेटिविटीज़ या आपकी कमज़ोरी को नहीं देख रही हूँ या मैं उन्हें देखते हुए स्वीकार कर रही हूँ।

उत्तर:- आप उसे स्वीकार कर रहे हो और बदले में 'विश्वास' की एनर्जी भेज रहे हो, यह विश्वास उसकी 'नेगेटिविटीज़' को खत्म करने में मदद करता है।

प्रश्न:- हमने देखा है कि कई बार तो हम अपनी आँखें ही बंद कर लेते हैं और हम कहते हैं कि मुझे उस पर पूरा विश्वास है, इसका कारण यह भी होता है कि हम उसकी कमज़ोरी को देखना ही नहीं चाहते हैं।

उत्तर:- ये हो सकता है कि आपकी निपुणता या आपके जो भी गुण हैं वो सेम मेरे जैसी नहीं होगी। आप हरेक को इस तरह समझो कि वो जो कर रहे हैं अपनी समझ के अनुसार अच्छा ही करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हमारे रिश्तों में जब नेगेटिव एनर्जी आती है तो ये कहीं न कहीं हमें हमारी अच्छाई से दूर ले आती है। अगर हम इस एनर्जी को बदल दें तो हम बहुत अच्छा बन सकते हैं।

आप अपने ऑफिस में या चाहे जहां भी रहते हो आज से ही यह प्रयास करना शुरू कर दो कि 'गुस्से के बिना काम होगा और अब मैं किसी पर भी गुस्सा नहीं करूंगा' काम हो तो भी ठीक, काम न हो तो भी ठीक, चार दिन में काम हो तो भी ठीक लेकिन हमें गुस्सा नहीं करना है। इसको हम कुछ दिनों के लिए ट्राय करके देखें, ओ.के. नेवर माइंड। थोड़े दिन काम थोड़ा सा कम होगा, कोई बात नहीं। पहली बात तो यह है कि इससे काम कम होगा ही नहीं। आपको मालूम हो कि गुस्सा करने के बाद या डाँट खाने के बाद किसी की परफॉरमेंस आज तक अच्छी नहीं हुई है। - क्रमश:

स्वास्थ्य

राई से सामान्य होती हृदय की धड़कनें

अचार या सब्जी बनाने में राई का प्रयोग स्वाद बढ़ाने के साथ इनकी गुणवत्ता भी बढ़ाता है। राई के ये छोटे-छोटे दानें कई तरह सेहत से जुड़ी समस्याओं में कारगर होते हैं।

सामान्य धड़कनें

हृदय की धड़कनें असामान्य हो रही हैं या घबराहट के साथ बेचैनी और कंपन महसूस कर रहे हैं, तो राई को पीसकर अपने हाथों और पैरों पर मलें। इससे आराम मिलेगा।

त्वचा रोग

राई में मौजूद मायरोसीन, सिनिग्रिन जैसे तत्व स्किन संबंधी रोगों के लिए बहुत फायदेमंद हैं। इसके लिए राई को रात भर पानी में भिगोएं और सुबह इस पानी को त्वचा पर लगाने से त्वचा की कई तरह की समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं।

बुखार

बुखार आने के साथ कई बार जीभ पर सफेद परत जम जाती है और भूख व प्यास धीरे-धीरे कम हो जाती है। ऐसे में सुबह के समय 4-5 ग्राम राई के चूर्ण को शहद के साथ लेने से कफ के कारण होने वाला यह बुखार ठीक हो जाता है।

कुष्ठ रोग

कुष्ठ रोग हो जाने पर पिसा हुआ राई का आटा 8 गुना गाय के पुराने घी में मिलाकर प्रभावित स्थान पर कुछ दिनों तक लेप करने से रोग धीरे-धीरे ठीक होने लगता है।

जोड़ों में दर्द

राई को पीसकर उसमें थोड़ा कपूर मिलाकर जोड़ों पर मालिश करने से अर्थराइटिस और जोड़ों के दर्द में फायदा होता है।

अस्थमा

अधिकतर लोग अस्थमा से बचने के लिए दवाइयों का सेवन करते हैं। लेकिन आज हम आपको अस्थमा से राहत पाने के लिए कुछ हर्ब्स बता रहे हैं।

अस्थमा के लिए हर्ब्स - ज़्यादा भागदौड़ और प्रदूषण भरे माहौल में रहने से अस्थमा की बीमारी होना लाज़मी है। दिल्ली जैसी खचाखच भरी मेट्रो सिटी में रहने वाले लोगों को वायु प्रदूषण के चलते सांस लेने में काफी दिक्कतें होती हैं। अस्थमा के मरीज़ों को खाँसी, ज़ुकाम और रात-दिन सांस लेने में तकलीफ होती है।

काफी फायदेमंद है काली लौंग - कहने को लौंग बहुत छोटी और दिखने में काली होती है। लेकिन इस छोटी सी लौंग के फायदे बहुत ज़बरदस्त हैं। लौंग को पानी में उबालकर सेवन करने से या इस पानी से भांप लेने से काफी आराम मिलता है। लौंग के साथ उबले पानी में शहद मिलाकर भी पिया जा सकता है।

तुलसी है असरदार - अस्थमा के मरीज़ों के लिए तुलसी बहुत असरकारी है। तुलसी के पत्तों को अच्छी तरह साफ करके इसमें पीसी काली मिर्च डालकर खाने से अस्थमा नियंत्रण में रहता है। इसके अलावा तुलसी को पानी के साथ पीसकर उसमें शहद डालकर चाटने से भी राहत मिलती है।

हल्दी - खाना बनाने और चेहरे पर निखार लाने के साथ ही हल्दी अस्थमा से बचने में भी लाभकारी है। अस्थमा का अटैक बार-बार न हो इसके लिए हल्दी और शहद को मिलाकर इसका सेवन करना चाहिए। दूध में हल्दी को मिलाकर भी सेवन किया जा सकता है।

सरसों का तेल - सरसों के तेल से अस्थमा के मरीज की छाती पर मालिश करने से बहुत आराम मिलता है। इसके अलावा पानी में मेथी के दाने उबालर कढ़ा भी पिया जा सकता है। हालांकि ये उपाय कुछ समय बाद असर करते हैं। लेकिन ये भी सच है कि बीमारी को जड़ से खत्म करने में मदद करते हैं।

नोएडा-उ.प्र.। भारत सरकार के पर्यटन मंत्री महेश शर्मा का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए ब्र.कु.सुदेश व ब्र.कु. ललिता।

पुणे। पद्मश्री अवॉर्ड से सम्मानित प्रसिद्ध संगीतकार पंडित हृदयनाथ मंगेशकर को ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर निमंत्रण देने के बाद ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु.नारायण, ब्र.कु.राकेश, ब्र.कु.मेघना तथा ब्र.कु.मिलिंद।

कानपुर-पुखरायाँ। महाशिवरात्रि पर आयोजित शांति यात्रा का शिवध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए विधायक नरेन्द्र पाल सिंह, नगराध्यक्ष डॉ.दयाशंकर आर्य, डॉ.एस.के. सचान, ब्र.कु.ममता, ब्र.कु.सुनिता, ब्र.कु.अनुज तथा अन्य।

पालमपुर-हि.प्र.। शिवजयंति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए एस.डी.ओ. अजीत भारद्वाज। साथ हैं राधा सूद,नगर परिषद, ब्र.कु.प्रेम, सुनिता बहन व अन्य।

आगरा-सिकन्दरा से.7। शिवजयन्ती के कार्यक्रम में ध्वजारोहण करने के बाद परमात्म स्मृति में विधायक गुटियारीलाल जी, ब्र.कु. अश्विना, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।

अररिया-बिहार। महाशिवरात्रि पर शिवध्वज फहराते हुए नगर परिषद के गौतम शाह, मोहिनी देवी स्कूल के डायरेक्टर संजय प्रधान, मो. मोहसिन आलम, ब्र.कु. उर्मिला, संजय भाई तथा अन्य अतिथिगणों के साथ ब्र.कु. भाई बहनें।

परमात्मा कहीं सीमित तो नहीं...!!!

आप सोचिये ज़रा... यदि परमात्मा हमेशा या यूँ कहें की फुल टाइम आपके आस-पास रहे तो कितना अच्छा हो जाये! आप ऐसा चाहते हैं? यदि आप ऐसा चाहते हैं तो निश्चित रूप से वो आपके आस-पास रहेगा, लेकिन सोच लो, आप कुछ भी अनाब-सनाब, गलत या धोखेबाज़ी नहीं कर पायेंगे। अगर इसके लिए तैयार हैं तो परमात्मा आपके साथ रहने को तैयार है।

एक कहानी हम आपको सुनाना चाहेंगे जिसमें एक व्यक्ति आकर किसी घर का दरवाज़ा खटखटाता है। जैसे ही दरवाज़ा खुलता है, तो वो व्यक्ति खोलने वाले से कहता है कि मैं भगवान हूँ। सामने वाला आश्चर्यचकित होकर कहता, सच में! मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा है। तो व्यक्ति कहता, क्या मैं कोई चमत्कार कर दूँ तो आप मान लेंगे कि मैं भगवान हूँ? वो कहता है हाँ। चमत्कार होता है, और वो व्यक्ति स्वीकार कर लेता है कि ये भगवान है। भगवान कहते हैं मैं आपके घर में रहूंगा, आपके साथ रहूंगा, आपके आस-पास रहूंगा। वो व्यक्ति हाँ तो कह देता है, लेकिन सोचते सोचते, उलझन में आकर।

रात को जैसे ही वो व्यक्ति सोता, उसके मन में झंझावत शुरु हो जाता। दरअसल वो एक बिज़नेसमैन था। वो सोचने लगा कि मैं कल डीलिंग कैसे करुंगा, ग्राहकों से बात कैसे करुंगा, जो मैं व्यापार में थोड़ा ऊपर-नीचे करता हूँ वो कैसे करुंगा। क्योंकि उसको डर लग गया कि अब मेरे आस-पास भगवान रहता है। इसी उलझन में उसे नींद ही नहीं आई। अब हम आप सब से पूछ रहे हैं कि सभी व्यक्ति यही कहते कि यदि भगवान का साथ मिल जाये, भगवान का सहारा मिल जाये तो हम धन्य हो जायेंगे। अब इस कहानी में तो यही है ना कि जब भगवान उस व्यक्ति के साथ भी है, फिर भी व्यक्ति उलझन में क्यों है, क्योंकि आज हमारे अंदर ये बात घुस चुकी है कि हमें इस दुनिया में अगर रहना है तो थोड़ा बहुत ऊपर-नीचे करना पड़ता है,

चीटिंग करनी पड़ती है, गुस्सा करना पड़ता है, झूठ बोलना पड़ता है, इसके बिना काम नहीं चलेगा। असत्यता इस हद तक हमारे अंदर है, कि उसका साथ हमें बर्दाश्त नहीं हो रहा है, और हम करना चाहते हैं सबकुछ ठीक! परमात्मा को आज हमने सीमित कर दिया है, दूर रखा है, इसीलिए तो उसे हम मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में जाकर थोड़ी देर तक मत्था टेककर बस तसल्ली देते हैं कि आप मेरे आस-पास रहो, मुझे सद्बुद्धि दो कि मैं गलत काम ना कर सकूँ। लेकिन वो जैसे ही हमारे साथ हो रहा है, तो हम उलझन में आ जा रहे हैं। यह बात सौ प्रतिशत सत्य है कि आज मानव भौतिकता में सम्पूर्णतया लिप्त हो चुका है, शारीरिक आवश्यकताएँ पूरा करने के लिए वो किसी भी हद तक जा सकता है। वो भगवान को भी इस चीज़ के लिए बर्दाश्त नहीं कर पा रहा है। आप बताओ, यदि गंदी प्लेट हो, क्या आप उसमें खाना खाएंगे, यदि गंदी कुर्सी हो तो क्या आप उसपर बैठेंगे, यदि गंदे लोग हैं तो क्या आप उनसे बात करेंगे? जब आप ये सारी चीज़ें पसंद नहीं करते, तो आप कैसे सोच सकते है कि भगवान आपको पसंद करेगा, जिसके अंदर इतनी गंदगी, अपवित्रता, लोभ, लालच, घृणा भरी हुई है। वो तो उसे देखना भी पसंद नहीं करेगा। समझा भगवान आपको पसंद क्यों नहीं कर पा रहा है या आप उसको रखने में असमर्थ क्यों हैं?

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

अरे भई! पहले भगवान को रखने की अपने दिल में वैसी सफाई लाओ, जिससे वो आपको पसंद करे, आपके आस-पास रहे। इसीलिए तो नहीं रह पा रहा है, चाहे आप जितना भी पूजा-पाठ, व्रत-उपवास करते हैं लेकिन वो मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे तक ही सीमित है, आपके साथ नहीं है। इसीलिए तो आप जाकर पूजा करके आते है, और करते हैं सिर्फ इस लोभ लालच को और ज़्यादा बढ़ाने के लिए। इसीलिए तो आज हम नीचे ही गिरते जा रहे हैं, क्योंकि भगवान इसमें आपका साथ नहीं दे सकता।

उपलब्ध पुस्तकें

प्रश्न :- छोटी-छोटी बातें मेरी स्थिति को डगमग कर देती हैं, व्यर्थ संकल्प तेज़ चलते हैं, सन्तुष्ट नहीं रह पाते हैं, इनसे छुटकारा पाने के लिए क्या पुरुषार्थ करें?

उत्तर :- स्वयं के विचारों को महान बनाना है व योगबल से अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाना है तो स्वयं को एकरस व अचल अडोल बनाने के लिए आँख खुलते ही ये संकल्प करें - मैं एक महान आत्मा हूँ..... मुझे भगवान मिल गए हैं, मुझे सम्पूर्ण सत्य ज्ञान मिल गया है, मैं शिव की शक्ति हूँ.....ये परिस्थितियां तो मेरे सामने कुछ भी नहीं हैं.......मैं तो तपस्वीमूर्त हूँ, पहले दस मिनट ये संकल्प करें.......सारे दिन में प्रति घण्टे दो स्वमान याद करें - मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ....... इससे आपका चित्त शांत हो जाएगा।

प्रश्न :- बाबा हमें बाप समान बनने की व तीव्र पुरुषार्थ करने की ओर इशारा दे रहे हैं, इसके लिए हम क्या-क्या विधियां प्रयोग करें?

उत्तर :- प्रथम लक्ष्य बनाएं कि मुझे योग का चार्ट चार घण्टे तक पहुँचाना है, दूसरा स्वमान का बहुत ज़्यादा अभ्यास करना है, इसके लिए कोई भी पाँच स्वमान चुन लें और उनका अभ्यास करें। इससे देह-भान व व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जाएंगे, तीसरा पवित्रता व निरहंकारिता पर ध्यान दें। पवित्रता में बहुत बड़ा सुख है, इसे प्राप्त करते चलें। चौथा यज्ञ सेवा व बाबा के लिए समर्पित भाव अपनायें। इस प्रकार पुरुषार्थ करने से बाप समान बनते जाएंगे व पुरुषार्थ भी तीव्र होता जाएगा।

मन की बातें
-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न :- योगाभ्यास का एकांत से क्या सम्बन्ध है? एकांत का अनुभव करने के लिए क्या करें?

उत्तर :- एकांत अर्थात जहाँ हमारे सिवाय अन्य कोई न हो। यह एकांत उन्हें नहीं भासता जो बाह्यमुखी हैं, जिन्हें योग का सुख नहीं मिलता उन्हें भी एकांत आकर्षित नहीं करता। एकांत का अनुभव करने के लिए स्वयं से इस तरह बातें किया करें...संगमयुग का मेरा यह जीवन बहुमूल्य है, इसमें चौरासी जन्मों का श्रेष्ठ भाग्य बनाने का सुअवसर है। मैं ऐसे सुंदर समय को कैसे व्यतीत कर रहा हूँ......भगवान का साथ मिला इस जीवन में..... हर समय उसके साथ का आनन्द लिया जा सकता है..... ऐसे समय को मैं कैसे सफल कर रहा हूँ. ......मेरा यह अनमोल समय कहीं परचिन्तन में तो नहीं बीत रहा है..... ये अतीन्द्रिय सुख का समय उलझनों में तो नहीं जा रहा है। इस तरह स्व-चिंतन करने से एकांत एक वरदान बन जाएगा।

प्रश्न :- मेरे पति व्यापारी हैं। वे घर में रात्रि 12 बजे ही आते हैं। मैं 1 बजे सोती हूँ, तो 4 बजे नहीं उठ सकती। प्रतिदिन 6 बजे ही उठ पाती हूँ और उठते ही मन भारी हो जाता है कि मेरा अमतृवेला मिस हो गया। सारा दिन इस कारण मेरा मन उदास रहता है। सब कहते हैं तुम्हें क्या हो गया है।

उत्तर :- आप रात्रि में ही योग कर लिया करो और सवेरे जब भी उठो तब से ही योग आरम्भ करो। 6 बजे से 8 बजे तक आप अच्छी स्थिति बनायें। परंतु शाम को 6 बजे से 8 बजे के मध्य आप एक घण्टा योग अवश्य करें। यह समय भी अमृतवेला जैसा ही है। सूर्योदय से पूर्व व सूर्यास्त के आसपास का समय बहुत सुन्दर होता है। ऐसा करने से आपको अमृतवेले जैसा ही आंनद आएगा। जीवन में एक बात याद रखनी है कि जो नहीं हो सकता, उसके कारण मन को उदास नहीं रखना है और जो सहज सम्भव हो उसका ही आनंद लेना है। आप स्वयं को प्रसन्न रखें। उठते ही याद करें अहा...मुझे इस जीवन में क्या-क्या मिला...मैंने भगवान को देखा....उसे पढ़ाते देखा....मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। मेरा तो जन्म ही सफल हो गया...मेरे जैसा खुशनसीब भला कौन होगा....स्वयं भगवान मेरा भाग्य बना रहा है, इन विचारों से स्वयं को आनन्दित करें।

प्रश्न :- मेरी समस्या यह है कि मेरा अमृतवेला योग ही नहीं लगता। मैंने बहुत कोशिश कर ली। परन्तु 5 बजे से स्वत: ही अच्छा योग लगता है।

उत्तर :- आप 5 बजे से अच्छा योग किया करें परंतु आपकी यह तीव्र इच्छा रहेगी ही कि 4 बजे भी योग का सम्पूर्ण आनन्द मिले। आप सवेरे 4 बजे अवश्य उठें। उठकर स्नान कर लें। किसी-किसी का ब्रेन स्नान व ब्रश करने के बाद ही फ्रेश व एक्टिव होता है। इसके बाद आप एक अव्यक्त मुरली पढ़ें तथा उसके मुख्य प्वाइंट्स लिखें। तत्पश्चात् मन पसन्द ईश्वरीय गीत सुनें और फिर बाबा के चित्र के आगे बैठकर उनसे रूह-रिहान करें तब तक 5 बज जाएंगे। फिर योग का आनंद मिलने लगेगा। सवेरे उठकर एकांत में भ्रमण भी कर सकते हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

!!! नवरात्रि एक रहस्य !!!

कहते हैं, जब विनाशकाल इस धरती पर निकट था, और सृष्टि पर अज्ञान व तमोगुणी रात्रि छाई हुई थी। राग-द्वेष चरम सीमा पर था, नर-नारी अपवित्रता की ओर अग्रसर थे, कहा जाता है कि सतयुग के प्रथम राजा श्रीनारायण भी मोह निद्रा में थे। ऐसी धर्मग्लानि के समय ही परमात्मा शिव ने त्रिदेवों के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। इन शक्तियों के कारण ही आदि शक्ति अथवा शिव शक्ति कहलाई। यह ज्ञान ही तीसरा नेत्र था। सहनशीलता, संतुष्टता, अंतर्मुखता, सौहार्द आदि दिव्य शक्तियाँ ही अष्ट भुजाएँ थीं। इन्हीं शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जगाया तथा उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया। उनका अंश भी रहने नहीं दिया। इसी का यादगार है कि सूर्य के वंश में शुम्भ-निशुम्भ नाम के दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्ता का नाम रक्तबिन्दु था और सेनापति का नाम धुम्रलोचन था। उनके दो मुख्य सहायकों का नाम चंड और मुंड था। ऐसी मान्यता है कि शिव की शक्ति से आदि कुमारी प्रकट हुई, उनके विकराल रूप से काली प्रकट

हुईं, उसने चंड और मुंड का विनाश किया, फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धुम्रलोचन और रक्तबिन्दु का विनाश किया। आज नवरात्रि में इन देवियों द्वारा दिये गए ज्ञान की यादगार में कलश की स्थापना की जाती है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्त जन जागरण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश जागृत करने की स्मृति में भक्त अखण्ड दीप जलाते हैं। उन कन्याओं के महान कर्त्तव्य के कारण ही वे हर वर्ष कन्या पूजन करते हैं और सरस्वती दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि हे अम्बे माँ मेरी ज्योति जगा दो। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन मांगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है, उनसे बुद्धि मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति मांगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है और शक्ति आंतरिक है। क्योंकि विकार अर्थात् रावण आंतरिक दुर्बलता के कारण ही प्रकट होते हैं। अब ये दुर्गा इत्यादि देवियों जिनका कीर्तन करते समय लोग शक्ति तथा बुद्धि बल मांगते हैं, वे कौन थीं। वास्तव में ये देवियों शिव की संतान थीं जो शिव शक्तियाँ या ब्रह्मापुत्रियाँ कहलाती थीं।

खुशी

- ब्र.कु. प्रीति

समय के साथ-साथ आज खुशी के मायने बदल चुके हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों में, भौतिक वस्तुओं में, सुख-सुविधाओं एवं सम्बन्धों में खुशी तलाशने का प्रयास कर रहा है। मनुष्य आज आवश्यकताओं के सीमित दायरों से निकलकर इच्छाओं के भँवर में फँस चुका है। वह जितना ही अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयत्न करता है उतना ही उसकी इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं।

आज मनुष्य इसलिए भी खुश नहीं रह पाता क्योंकि या तो वो अतीत में जीता है या फिर भविष्य में। यदि हम अतीत में जी रहे हैं तो बीती बातों को सोच-सोचकर अभी वर्तमान में भी दु:खी होते रहेंगे। इसका कारण यह है कि उस बात को हमने अपने मन में ही रखा है, निकाला नहीं है। अतीत को हम जितनी बार दोहराते हैं, तो वही अतीत हमारा वर्तमान बन जाता है और फिर यह हमारे भविष्य पर प्रभाव डालता है। अतीत की तरह ही हम कहीं न कहीं भविष्य में भी बहुत ज़्यादा जीते हैं, हम खुशी को भविष्य में तलाशने का प्रयास करते रहते हैं। हम ऐसा सोचने लगते हैं कि कोई वस्तु हमें प्राप्त होगी तब हम खुश होंगे। उस वक्त हमारा सारा ध्यान केवल इस बात पर होता है कि जब ये होगा तब खुशी मिलेगी। जब हमारी खुशी किसी चीज़ पर निर्भर होती है तो भय स्वत: ही आ जाता है, क्योंकि जहाँ निर्भरता है वहाँ भय की भावना तो होगी ही। हम कितनी भी कोशिश कर लें, भय का एक विचार आ ही जाएगा। खुशी और भय दोनों कभी भी एक साथ नहीं हो सकते। इस भय के कारण हम अपने वर्तमान की खुशी को खो देते हैं और केवल भययुक्त होकर रह जाते हैं।

कुछ मनुष्य केवल किसी न किसी क्षणिक प्राप्ति के पीछे अपनी खुशियाँ गंवाते रहते हैं। वे लोग केवल प्राप्ति पर ही निर्भर हो जाते हैं। वे वास्तव में खुश नहीं होते हैं, क्योंकि वे हमेशा दूसरों की प्राप्ति की ओर देखते रहते हैं। जिस पल वो कुछ प्राप्त करते हैं तो उन्हें राहत की अनुभूति होती है, परंतु इसमें केवल राहत होती है, खुशी नहीं! और ये भी थोड़ी देर के लिए होता है। कई मनुष्य रिश्ते-नाते एवं संबंधों में खुशी ढूंढ़ते रहते हैं। यदि रिश्तों में कुछ मन-मुटाव हो गया तो उनकी खुशी गायब हो जाती है। रिश्तों को वे खुशी का आधार मान बैठते हैं। उनकी खुशी जो स्वयं उनके हाथ में है, उसे वह दूसरों से प्राप्त होने वाली चीज़ समझ लेते हैं। वे स्वयं के अंदर झाँकने का कभी प्रयास ही नहीं करते, वे कभी यह देखते ही नहीं कि स्वयं उनके भीतर खुशी का भंडार भरा है।

यदि मनुष्य सही मायनों में स्थायी खुशी को आज के तमोगुणी वातावरण में प्राप्त करना चाहता है तो उसका एकमात्र स्रोत स्वयं के भीतर उस खुशी को तलाशना होगा, उसे जागृत करना होगा।

यदि मनुष्य सही मायनों में स्थायी खुशी को आज के तमोगुणी वातावरण में प्राप्त करना चाहता है तो उसका एकमात्र स्रोत स्वयं के भीतर उस खुशी को तलाशना होगा, उसे जागृत करना होगा जिसके लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे कि:-

– हम दूसरों को अपने दुखों के लिए दोष देना बंद कर दें।

– सुबह उठते ही खुशी का संकल्प करें। स्वयं से कहें कि आज कुछ भी हो जाए, मुझे खुश रहना है।

– नकारात्मक संकल्पों को अपने मन में प्रवेश न करने दें। अपना नज़रिया सदैव सकारात्मक रखें।

– खुशी को दूसरों से प्राप्त होने वाली वस्तु न समझें, स्वयं में ढूंढें।

– अतीत एवं भविष्य की बातों को छोड़कर वर्तमान में जीना सीखें।

– किसी भी अल्पकालिक प्राप्ति को अपनी खुशी का आधार न बनायें।

– सदैव हर परिस्थिति में संतुष्ट रहें और सभी को संतुष्ट करने का प्रयास करें।

– खुशी को व्यक्ति, वैभव, वस्तु इत्यादि सीमाओं में न बांधें।

– किसी भी असफलता पर निराश न हों बल्कि सफलता प्राप्त करने के लिए दुगना प्रयास करें किंतु खुशी एवं सरलता के साथ।

– अपने मन एवं मस्तिष्क पर किसी बात का बोझ न डालें, सदैव हल्के रहें।

सदैव यह याद रखें कि खुशी हमारी स्वयं की रचना है। आप धीरे-धीरे परिवर्तित करने का प्रयास करें।

नई दिल्ली। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री पीयूष गोयल को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाये गये एशिया के सबसे बड़े सोलर प्लांट की जानकारी देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.जयसिम्हा,मा.आबू, ब्र.कु.रघु, ब्र.कु.सविता तथा ब्र.कु.फातिमा।

भोपाल-म.प्र.। राज्यमंत्री लालसिंह आर्य को ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ का निमंत्रण देने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.नेहा तथा ब्र.कु.दिलीप।

पणजी-गोवा। केन्द्रीय मानवाधिकार संस्थान के अध्यक्ष मिलिंद दहिवले ब्र.कु.शोभा को 'समाज गौरव सम्मान पुरस्कार-2017' से सम्मानित करते हुए।

इंदौर। शिव जयंति के अवसर पर सात दिवसीय राजयोग शिविर कार्यक्रम में विधायक महेन्द्र हार्डिया, ब्र.कु.हेमलता, ब्र.कु.अनिता, पार्षद प्रेम जारवाल तथा ब्र.कु.उषा।

इटारसी। एस.डी.एम. अभिषेक गहलोत से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.रूपवती तथा ब्र.कु.जितेन्द्र।

दावनगेरे-कर्नाटक। शिव जयंति पर शांति रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए पूर्व मेयर श्रीमती अश्विनी, डॉ.सुशीलम्मा, ब्र.कु.लीला तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारी संस्था ही दिखा सकती है विश्व को नई राह

शिव ध्वजारोहण एवं गुब्बारे उड़ाकर दिया विश्व शांति का संदेश

ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

शांतिवन। भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी ने कहा कि जो भारत को ऊँचा उठाना चाहते हैं, देश इस संस्था से जुड़कर व्यक्ति अपने जीवन में प्रमाणिकता, शुद्धता, सात्विकता धारण कर सकता है। मैंने अपना अंतरात्मा में झाँका और उसे महसूस किया।यहाँ आकर एक नई शक्ति प्राप्ति का अनुभव हो रहा है।

दीप प्रज्वलित करते हुए दीपक चौरसिया, दादी रतनमोहिनी, दादी जानकी, सुधीर चौधरी, लालकृष्ण आडवाणी, दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी व अन्य।

आडवाणी द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना की 80वीं वर्षगांठ पर सौ फीट ऊँचे पोल पर शिवध्वज लहराया गया, जो कि समारोह के प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बना।

सेवा की भावना जन-जन में भरना चाहते हैं, जो हर व्यक्ति में प्रमाणिकता, ईमानदारी, अनुशासन कूट-कूटकर भरा देखना चाहते हैं, उन्हें ब्रह्माकुमारी संस्था में आकर सीखना होगा। 102 साल की आयु में भी इस संस्था का संचालन करने वाली दादी जानकी का आदर्शमय जीवन विश्व के लिए अनुकरणीय है। उनका आदर्शमय जीवन संसार को प्रभावित कर रहा है। ब्रह्माकुमारीज विश्व में एकमात्र ऐसा संस्थान है जिसकी नींव भी

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन ने कहा कि कल से मुझे यहाँ आकर जो खुशी व मन की शांति मिल रही है उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। वर्तमान समाज की हालत देखकर डर लगता है, लेकिन यहाँ आकर बहुत ही खुद को सुरक्षित अनुभव कर रही हूँ। ब्रह्माकुमारीज़ ममता भरी संस्था है जो विश्व को अपने आंचल

पूर्व उप प्रधानमंत्री तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए।

माताओं-बहनों के द्वारा रखी गई और जिनके नेतृत्व में विश्व व्यापी विस्तार भी हुआ। जिनके जीवन मूल्य होते हैं वही दूसरों में मूल्यों को स्थापित कर सकता है। विश्व के आगे आदर्श बन सकने वाली या उसे सही दिशा दे सकने वाली यही एक संस्था है। उन्होंने कहा कि मैंने बचपन से ही आरएसएस से जुड़कर शिक्षा, आदर्शवाद व अनुशासन सीखा।

में लेकर उसे संवारती व सुधारती जा रही है। आज के जो राजनीतिक व सामाजिक हालात हैं उसे देखकर डर लगता है कि हम अपने बाद आने वाली पीढ़ी के लिए कैसा समाज छोड़कर जा रहे हैं। लेकिन यह संस्था जिस प्यार, मोहब्बत के साथ सेवा कर रही है उसे देखकर एक विश्वास पैदा होता है। दादी जानकी के हाथ में हाथ देकर पहली बार

जी न्यूज़ के एडिटर इन चीफ सुधीर चौधरी ने कहा कि यहाँ आकर ऐसा अनुभव हो रहा है कि जैसे मैं आध्यात्मिक रूप से गरीब दुनिया से निकलकर किसी अमीर दुनिया में आ गया हूँ। इस हॉल में प्रवेश करते ही पावरफुल पॉज़ीटिव वायब्रेशन्स अनुभव हो रहे हैं। जिस जगह इतने सकारात्मक प्रकम्पन हों, जहाँ इतनी श्रेष्ठ आत्माएं हों, वह जगह कितना पवित्र होगा। यहाँ से मैं ज़्यादा से ज़्यादा यह वायब्रेशन्स अपने मन-मस्तिष्क में भरकर वापस ले जाना चाहता हूँ। हमारी सेना देश की सीमाओं की रक्षा करती है, लेकिन यह ऐसी आध्यात्मिक सेना है जो हमारे मन की नकारात्मकता से रक्षा करती है। यह सेना हमारे मनोबल, चरित्र व श्रेष्ठता की रक्षा करती है। आज के समय में मानवीय मन पर कार्य करने की आवश्यकता है। आने वाली दुनिया श्रेष्ठ विचारों से चलेगी न कि पैसे से। देश के साठ करोड़ युवाओं को सकारात्मक, संतुष्ट व सृजनकारी भावनाओं से सम्पन्न बनाये रखने में ब्रह्माकुमारी संस्था बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आज लोगों को आंतरिक रूप से सशक्त करने की ज़रूरत है। आज का समाज बाहरी रूप से अधिक सम्पन्न बन गया है, लेकिन फिर भी खुश रहने के मामले में बहुत पीछे होता जा रहा है।

इंडिया न्यूज़ के एडिटर इन चीफ दीपक चौरसिया दादी हृदयमोहिनी से मुलाकात के दौरान ईश्वरीय सौगात स्वीकार करते हुए। साथ हैं ब्रह्माकुमार मृत्युंजय,उपाध्यक्ष,शिक्षा विभाग तथा ब्र.कु. नीलू बहन।

इंडिया न्यूज़ के एडिटर इन चीफ दीपक चौरसिया ने कहा कि इस सकारात्मक ऊर्जा की आवश्यकता दिल्ली में अधिक है। खुश रहने के लिए अपने आपसे प्यार करो और उस परमात्मा से प्यार करो जिनसे सकारात्मक शक्ति प्राप्त होती है। जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। भारत जैसी संस्कृति व इतिहास विश्व में किसी देश का नहीं है। इस आध्यात्मिक ज्ञान को युनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में जोड़ने की आवश्यकता है। हैप्पीनेस इंडेक्स के मामले में ब्रह्माकुमारी संस्था एक रोशनदान की तरह काम कर रहा है जिसे दरवाज़े के रूप में बदलना होगा।

कार्यक्रम के दौरान राज्यसभा के डेप्युटी स्पीकर पी.जे. कुरियन को मोमेन्टो प्रदान करते हुए ब्र.कु. निर्वैर तथा ब्र.कु. मृत्युंजय।

जी न्यूज़ के एडिटर इन चीफ सुधीर चौधरी को मोमेन्टो प्रदान करते हुए ब्र.कु. निर्वैर तथा ब्र.कु. मृत्युंजय।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक) **कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।**

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 11th Apr 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।